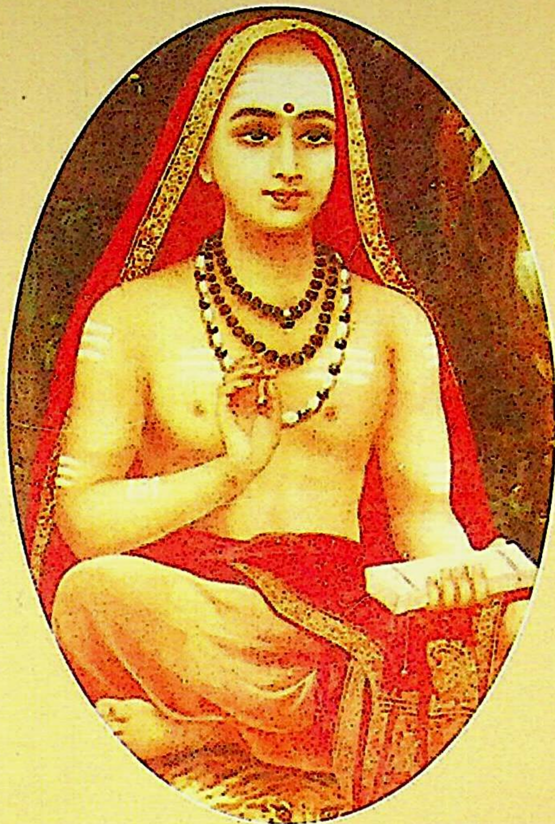


पुस्तकसूची / Catalogue

W.E.F.—1.11.2011

SHRI DAKSHINAMURTI MATH PRAKASHAN

श्री दक्षिणामूर्ति मठ प्रकाशन



D-49/9 MISHRA POKHRA, VARANASI-221010

डी. 49/9 मिश्र पोखरा, वाराणसी-221010 (उत्तर-प्रदेश)

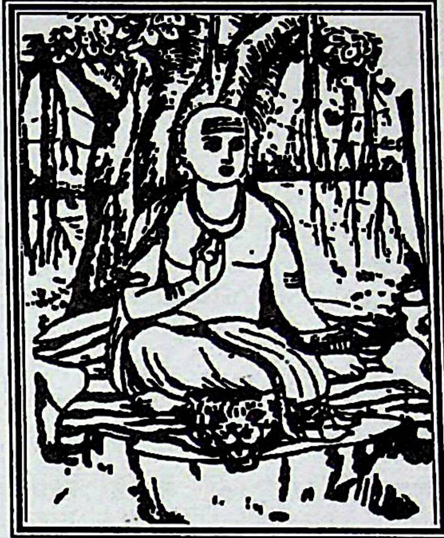
फोन : 0542-2410654

YOUR ATTENTION PLEASE

कृपया ध्यान दें

Note

- Booksellers are normally given a rebate of 25% on cash payment.
- पुस्तक विक्रेताओं को सामान्यतः नगद भुगतान पर 25% कमीशन दिया जाता है।



आ शैलादुदयात्तथाऽस्तगिरितो भास्वद्यशोरश्मिभि-
र्व्याप्तं विश्वमनन्धकारमभवद्यस्य स्म शिष्यैरिदम् ।
आराज्ज्ञानगभस्तिभिः प्रतिहतश्चन्द्रायते भास्कर-
स्तस्मै शङ्करभानवे तनुमनोवाग्भिर्नमस्स्यात्सदा ॥

श्रीसुरेश्वराचार्याः

अद्वैतग्रन्थरत्नमञ्जूषा

(ADVAITA-GRANTH-RATNA-MAÑJUṢĀ)

14-UPADEŚA-SĀHASRĪ IN A NUTSHELL (English)

Śrī Svāmī Maheśānada Giri

Size - 23×36/8 Pages-20 Price : [10=00]

The introduction to the Hindi commentary of Upadeśa-Sāhasrī has been published in the form of a separate book of Śrī Svāmījī, a great master of modern times, who seems to have found himself in tune with the great Śaṅkarācārya while discussing various ideas propounded in the original text.

Beginners in the study of Vedānta will certainly find this introduction as a key to the text of Upadeśa-Sāhasrī.

१५-उपदेशसाहस्री (संस्कृत)

ग्रन्थकार : भगवत्पाद श्री शंकराचार्य, संस्कृत विवृति : आनन्दगिरि

आकार : 20×30/8-पृष्ठ : 36+184 सम्पादक : एस. सुब्रह्मण्य शास्त्री मूल्य : 50.00

भाष्यग्रन्थों में तो पूज्यपाद आचार्य ने मूलग्रन्थों पर अपनी टिप्पणी की है, जब कि उन्हें अपने अनुभव के आधार पर उसका जैसे विस्तार करना था वह स्वतन्त्र रूप से रचित प्रकरण-ग्रन्थों में स्पष्ट किया है। उपदेशसाहस्री ऐसे प्रकरण-ग्रन्थों में से अतिविशिष्ट व सर्वांगपरिपूर्ण ग्रन्थ है। स्वयं आचार्य ने अपनी इस कृति को उपनिषद् की संज्ञा देकर मानों यह संकेत किया है कि अध्येता इसे श्रौत ग्रन्थों जितना ही महत्त्व दें। आनन्द गिरि कृत विवृति पहली बार प्रकाशित हुई है। आचार्य के अन्य प्रकरणों में किसी एक प्रक्रिया या

विषयका ही विवेचन किया गया है जब कि सम्पूर्ण वेदान्तशास्त्र का दृष्टिकोण व साधनापद्धति का विशद विवेचन होने के कारण उपदेशसाहस्री अपने में अद्वितीय है।

१६-सिद्धान्तबिन्दु (संस्कृत)

मूल दशश्लोकी के रचयिता : *भगवत्पाद श्री शंकराचार्य,*
सिद्धान्तबिन्दुकार : *मधुसूदन सरस्वती* संस्कृत टीका : *गौड ब्रह्मानन्द*

मूल्य : 120.00

आकार : 20×30/8-पृष्ठ : 26+178 सम्पादक : एस. सुब्रह्मण्य शास्त्री

भगवत्पाद श्री शंकराचार्य का 'दशश्लोकी' नामक प्रकरण अत्यन्त लघु कलेवर का होने के कारण सांकेतिक होकर रह गया है। इस पर सिद्धान्तविन्दु की रचना कर मधुसूदन सरस्वती जी ने न केवल मूल ग्रन्थ को स्पष्ट किया है अपितु उसका आधार लेकर चिन्तामणि से प्रारम्भ हुई न्याय की शैली को अपनाते हुए नववेदान्त की नींव डाली है।

सकल शास्त्रों के मर्मज्ञ गौडब्रह्मानन्द कृत न्यायरत्नावली टीका तो मधुसूदनकृत ग्रन्थ की महत्ता को बढ़ाने वाली ही है।

१७-शतश्लोकी (संस्कृत)

ग्रन्थकार : भगवत्पाद श्री शंकराचार्य, संस्कृत टीकाकार : आनन्दगिरि

मूल्य : 60.00

आकार : 20×30/8-पृष्ठ : 12+60 सम्पादक : एस. सुब्रह्मण्य शास्त्री; मणि द्राविड

आधुनिक मान्यता वेद का कालविशेष से सम्बंध मानकर मंत्रभाग को ब्राह्मणभाग से प्राचीन स्वीकारती है और ब्राह्मण-आरण्यक में विशेषतः विस्तृत होने से अद्वैत की प्राचीनता पर संदेह करती है। यद्यपि मंत्र-ब्राह्मणात्मक एक ही अनादि वेद है तथापि इस मान्यता की संभवतः पूर्वाशंका मन में रखकर भगवान् भाष्यकार ने विशेषतः मंत्रों के आधार पर औपनिषद दर्शन का मधुर-रुचिर स्रग्धराओं में अत्यन्त साहित्यिक एवं गंभीर विवेचन शतश्लोकी में किया है। दैनिक जीवन में उपयोगी अनेक शिक्षाओं से भरपूर यह प्रकरण विस्तृत

संस्कृत टीका सहित प्रकाशित है। टीकाकार का नाम श्री आनन्द गिरि है। प्रथम संस्करण निकलने के बाद उपलब्ध एक पुरातन प्रति के अनुसार इस द्वितीय संस्करण में टीका का समग्र पाठ सुधारा गया है व सभी छूटे अंश यथास्थान जोड़ दिये हैं। टिप्पणी, विषयसूची, आकरसूची आदि से ग्रंथ की उपयोगिता बढ़ी हुई है।

१८-पञ्चीकरणम् (संस्कृत)

ग्रन्थकार : भगवत्पाद श्री शंकराचार्य, संस्कृत टीकाएँ : सुरेश्वराचार्यकृत वार्तिक, नारायणेन्द्रकृत वार्तिकाभरण; आनन्दगिरिकृत विवरण, रामतीर्थकृत तत्त्वचन्द्रिका

आकार : 20×30/8-पृष्ठ : 12+48 सम्पादक : एस. सुब्रह्मण्य शास्त्री मूल्य : 50.00

संन्यासाश्रम में साधना हेतु अपनाने योग्य ध्यानपद्धति के मार्गदर्शक इस ग्रन्थ के अध्ययन को सुरेश्वराचार्य ने तो प्रत्येक संन्यासी के लिए अनिवार्य ही बताया है। 'एतदालम्बनं श्रेष्ठमेतदालम्बनं परम्' कहकर भगवती श्रुति जिसकी प्रतीक के रूप में श्रेष्ठता का प्रतिपादन करती है उस प्रणव की ध्यानोपासना की विधि इस ग्रन्थ में विशद रूप से वर्णित है। सुरेश्वराचार्य व आनन्द गिरि दोनों ने इस पर टीका करना आवश्यक समझा, यह बात ग्रन्थ की उपादेयता में ही प्रमाण है।

१९-प्रकरणाष्टकम् (संस्कृत)

भगवत्पाद श्री शंकराचार्य के आठ प्रकरण-ग्रन्थों का संकलन

संस्कृत टीकाकार : पद्मपादाचार्य, आनन्द गिरि, स्वामी विद्यारण्य, सदाशिवेन्द्रयोगी आदि

आकार : 20×30/8-पृष्ठ : 188 सम्पादक : एस. सुब्रह्मण्य शास्त्री मूल्य : 120.00

प्रकरणद्वादशी में से आचार्य के आठ लघु-प्रकरण इस ग्रंथ में संकलित हैं। प्रत्येक ग्रंथ के साथ कम से कम एक टीका दी गयी है। अपरोक्षानुभूति, आत्मबोध, त्रिपुरी, मनीषापञ्चक, आत्मज्ञानोपदेशविधि, उपदेशपञ्चरत्न, स्वरूपनिरूपण और वाक्यवृत्ति; इन प्रकरणों के बारे में

इतना ही कहना पर्याप्त है कि इनके अध्ययन के अभाव में भगवत्पाद आचार्य का प्रस्थानत्रयी पर किया भाष्य समझ पाना कठिन है। वेदान्त के प्रारम्भिक स्तर के जिज्ञासुओं को विषय-प्रवेश के लिये इन प्रकरणों की सहायता सर्वविदित है।

२०-प्रकरणद्वादशी (संस्कृत)

भगवत्पाद श्री शंकराचार्य के बारह प्रकरण-ग्रन्थों का संकलन

संस्कृत टीकाकार : पद्मपादाचार्य, विद्यारण्य, आनन्दगिरि, गौडब्रह्मानन्द, सदाशिवेन्द्र आदि

आकार : 20×30/8-पृष्ठ : 700 सम्पादक : एस. सुब्रह्मण्य शास्त्री मूल्य : 250.00

उपदेशसाहस्री, सिद्धान्तबिन्दु, शतश्लोकी, पञ्चीकरण, अपरोक्षानुभूति, आत्मबोध, त्रिपुरी, मनीषापञ्चक, आत्मज्ञानोपदेशविधि, उपदेशपञ्चक, स्वरूपनिरूपण और वाक्यवृत्ति इन बारह प्रकरणों का यह सटीक संकलन वेदान्त के जिज्ञासुओं के लिये विषयवस्तु के स्पष्टीकरण की आवश्यक सामग्री प्रस्तुत करता है। पद्मपाद, विद्यारण्य, आनन्दगिरि आदि विद्वानों की टीकाएँ प्रकरणों को मात्र स्पष्ट ही नहीं करतीं, उनकी उपादेयता के नये आयाम भी जोड़ती हैं। भगवत्पाद आचार्य ने परम्परा से प्राप्त ग्रन्थों पर व्याख्या करते हुए जिन सिद्धान्तों का आविष्कार किया उन्हें ही क्रमबद्ध रूप में इस प्रकार के स्वतंत्र ग्रंथों में स्पष्ट किया है।

२१-उपनिषद्भाष्यम्-प्रथम

ईशादि अष्टोपनिषदों का भगवत्पाद शंकराचार्यकृत भाष्य

संस्कृत टीकाकार : सुरेश्वराचार्य, आनन्दगिरि, गोपालयतीन्द्र, अच्युतकृष्णानन्द आदि

आकार : 23×36/8-पृष्ठ : 34+746 सम्पादक : एस. सुब्रह्मण्य शास्त्री मूल्य : 500.00

वैदिक वाङ्मय का ज्ञानकाण्डात्मक अंश उपनिषदों के रूप में प्रसिद्ध है। अद्वैतनिष्ठा को वेदों के तात्पर्य के रूप में ग्रहण करते हुए भगवत्पाद आचार्य ने दश उपनिषदों पर विस्तृत भाष्य लिखकर वैचारिक ऊहापोह की जो प्रक्रिया प्रारम्भ कर दी, उससे अवैदिक मतों का युक्तिबद्ध खण्डन कर दिया। ईशादि अष्टोपनिषदों का भाष्य एवं उपलब्ध सभी टीकाओं का संकलन इस खण्ड में प्रस्तुत किया गया है। तैत्तिरीयवार्तिक

भी आनंदगिरि टीका समेत इस संकलन में शोभित है। माण्डूक्यकारिका-भाष्य पर अनुभूतिस्वरूपाचार्यकृत टीका सर्वप्रथम प्रकाशित हुई है। द्वितीय संस्करण में इस टीका का अन्य मातृकाओं के अनुसार पाठ-शोधन पण्डित मणि द्राविड ने किया है।

२२-बृहदारण्यकोपनिषत्सम्बन्धभाष्यवार्तिकम् (संस्कृत)

बृहदारण्यकोपनिषद् के सम्बन्धभाष्य का सुरेश्वरकृत वार्तिक; 'शास्त्रप्रकाशिका' संस्कृत व्याख्या : आनन्दगिरि

आकार : 23×36/8-पृष्ठ : 224 सम्पादक : एस. सुब्रह्मण्य शास्त्री (पुनर्मुद्रणाधीन)

भगवत्पाद शंकराचार्य द्वारा बृहदारण्यकोपनिषद्भाष्य के प्रारम्भ में भूमिका के रूप में लिया गया अंश सम्बन्ध भाष्य कहलाता है। मीमांसकों के मत का स्पष्ट खण्डन करने के लिए आचार्य ने इस अंश का उपयोग किया। सुरेश्वराचार्यकृत वार्तिक न केवल भाष्य के अर्थ को स्पष्ट करता है अपितु आवश्यकता के अनुसार विषय के प्रतिपादन का विस्तार करता है, भाष्य के गम्भीर व गूढ अंशों की युक्तियों के द्वारा नई संगति भी लगाता है। पूर्वमीमांसा व उत्तरमीमांसा—दोनों विचार-धाराओं के प्रकाण्ड विद्वान् सुरेश्वराचार्य के अतिरिक्त भला और कौन ऐसा वार्तिक लिखने में सक्षम होता? वार्तिक में प्राभाकरमीमांसा का मार्मिक खण्डन है जिसके लिये पूर्वपक्ष समझना अनिवार्य है। आनन्द गिरि स्वामी ने टीका में प्रभाकर के सिद्धान्तों का इतना विशद व स्पष्ट वर्णन किया है कि बृहती आदि से भी ज्यादा हृदयग्राही निरूपण बन गया है।

२३-बृहदारण्यकोपनिषद्भाष्यवार्तिकम्-प्रथम (संस्कृत)

वार्तिककार : श्री सुरेश्वराचार्य; संस्कृत टीका : आनन्द गिरि

आकार : 23×36/8-पृष्ठ : 800 सम्पादक : एस. सुब्रह्मण्य शास्त्री मूल्य : 200.00

'वार्तिकान्ता ब्रह्मविद्या' कह कर जिस ग्रन्थ की महत्ता आनन्द गिरि जैसे विद्वान् ने वर्णित की है उस ग्रन्थ के दो अध्याय इस खण्ड में टीकासहित दिये गये हैं। भगवत्पाद आचार्य द्वारा भाष्य में मीमांसकों का जो मुखमर्दन किया गया है, उसका सटीक विवेचन सुरेश्वर से बेहतर और कौन करता? स्वयं आचार्य की आज्ञा के अनुसार वार्तिक लिखकर सुरेश्वराचार्य ने भी इस एक ग्रन्थ के ही माध्यम

से अपनी विद्वत्ता की छाप छोड़ दी। वार्त्तिक पर आनन्द गिरि की टीका भी साथ में ही दी गयी है जिसे प्रभाकर-मत समझने के लिये भी उतना ही आवश्यक समझा जाता है जितना वेदान्तसिद्धान्त और विशेषकर वार्तिकार्थ बुद्धिगत करने के लिये।

२४-उपनिषद्भाष्यम्-२ (छान्दोग्य) (संस्कृत)

भगवत्पाद शंकराचार्यकृत छान्दोग्यभाष्य

संस्कृत टीकाकार : आनन्द गिरि, नरेन्द्रपुरी एवं अभिनवनारायणेन्द्र

आकार : 23×36/8-पृष्ठ : 540 सम्पादक : एस. सुब्रह्मण्य शास्त्री (द्वितीय संस्करण : श्री मणि द्राविड) मूल्य : 350.00

भगवत्पाद शंकराचार्य द्वारा छान्दोग्य-उपनिषद् पर किये गये भाष्य के साथ तीन प्रमुख टीकाएँ इस खण्ड में संकलित हैं। सम्पादक ने विस्तृत टिप्पणियों में मतान्तरीय व्याख्याओं की विद्वत्तापूर्ण आलोचना उपस्थित की है जिसमें तुलनात्मक अध्ययन के लिए यह संस्करण अनिवार्य हो गया है। द्वितीय संस्करण में उपनिषच्छब्दकोश एवं उद्धरणसूची जोड़कर ग्रन्थ को सर्वांगपूर्ण बनाया गया है।

25-VEDĀNTA THROUGH ŚAṄKARA'S PRAKARAṆAS (English)

Svāmī Maheśānada Giri

Size : 22x30/8 Pages : 64 Price : [30=00]

This book, which is in fact a preface to 'Prakaraṇadvādaśī' is penned by no less an authority on Vedanta than Svāmī Maheśānanda Giriji, Mahāmaṇḍaleśvara and pontiff of the Dakṣiṇā Murti Matha, Varanasi. Svāmīji is not only an adept in Vedānta and other Indian Schools, But also has a keen knowledge of the various Western ones. Fortunately, the lack of linguistic communication between the present, which is now centered in the Euro-American culture, and the past, which is one of the prime reasons for the untimeliness of present Indian thought, is conspicuous by its absence in the writings of Svāmīji.

26-AN INTRODUCTION TO CHĀNDOGYA BHĀṢYA (English)

Svāmī Maheśānanda Giri

Size : 22x30/8 Pages : 82 Price : [40=00]

Though there are many works going by the name of Upaniṣads, only ten ot them have had the gracious privilege of being commented upon by the great Śaṅkarācārya. The Chāndogya-upaniṣad is such a one. The Institute has already published the Chānrdogya Bhāṣya, Ānanda Giri' s gloss and two other commentaries. Mahāmandaleśvara Śrī Svāmī Maheśānanda Giri jī had been kind enough to bedeck the volume with a masterly introduction. As we found the introduction an informative and critical assessment of the Bhāṣya and Ṭīkās, it has been published as a separate booklet.

Svāmī jī has logically refuted modern accusations on Vedānta and given innumerable directives to a re-searcher in the introductory essay.

२७-बृहदारण्यकोपनिषद्-विद्यारण्यदीपिका (संस्कृत)

'दीपिका' संस्कृत टीका : श्री विद्यारण्य

आकार : 23×36/8-पृष्ठ : 176 सम्पादक : एस. सुब्रह्मण्य शास्त्री मूल्य : 60.00

थोड़े से अन्तर के साथ बृहदारण्यकोपनिषद् की दो आवृत्तियाँ क्रमशः यजुर्वेद की माध्यन्दिन शाखा और काण्व शाखा में मिलती हैं। भगवत्पाद श्री शंकराचार्य द्वारा काण्वशाखीय उपनिषद् पर भाष्य किये जाने से परवर्ती विद्वानों ने भी उस पर व्याख्यायें कीं। माध्यन्दिनशाखीय उपनिषद् पर विस्तृत टीका के अभाव की पूर्ति श्री विद्यारण्य स्वामी की दीपिका द्वारा हुई है।

२८-उपनिषद्भाष्यम-३ (बृहदारण्यक) (संस्कृत)

भाष्यकार : भगवत्पाद श्री शंकराचार्य; संस्कृत टीका : आनन्द गिरि एवं विद्यारण्य

आकार : 23×36/8-पृष्ठ : 89+608 सम्पादक : एस. सुब्रह्मण्य शास्त्री मूल्य : 500.00

शुक्ल यजुर्वेद के शतपथ ब्राह्मण के अन्त में आने वाली यह उपनिषद् सबसे बड़ी उपनिषद् है। आचार्य का भाष्य काण्वशाखीय पाठ के आधार पर है तो विद्यारण्यकृत दीपिका माध्यंदिनशाखीय पाठानुसारिणी है। आनन्दगिरि ने भाष्य पर टीका लिखते समय सुरेश्वरकृत वार्तिक के दृष्टिकोण को महत्त्व दिया है।

विस्तृत कण्डिका-सूची और शब्दवाक्यकोष का परिशिष्टमें अन्तर्भाव किया गया है। आचार्य महामण्डलेश्वर श्री स्वामी महेशानन्द गिरि जी द्वारा विस्तृत अंग्रेजी भूमिका विषयवस्तु को स्पष्ट करने में सहायक होगी।

29-AN INTRODUCTION TO BṚHADĀRAṆYAKA BHĀṢYA (English)

Svāmī Maheśānanda Giri

Size : 22x30/8 Pages : 89 Price : [50=00]

Amongst all Upaniṣads, Bṛhadāraṇyaka is the most voluminous and has the greatest depth. It belongs to Yajurveda, forming the last part of its Śatapatha Brāhmaṇa. The Bhāṣya by Śrī Śaṅkarācārya, along with the gloss by Ānanda Giri, has already been published by the Institute. A critical introduction to the Bhāṣya and Tīkā was written by Śrī Svāmījī and was added to the previous publication. As the introduction itself proved to be a critical essay on the bhāṣya it has been brought out in the form of a separate booklet. The readers and researchers of bhāṣya shall be necessarily benefitted by the light thrown by the unparalleled authority of Vedāntic school today.

३०-बृहदारण्यकोपनिषद्भाष्यवार्तिकम्-२ (संस्कृत)

वार्तिककार : श्री सुरेश्वराचार्य, संस्कृत टीका : आनन्दगिरि

आकार : 23×36/8-पृष्ठ : 35+739-1383+186 सम्पादक : एस. सुब्रह्मण्य शास्त्री मूल्य : 300.00

प्रथम खण्ड में वार्तिक के प्रथम दो अध्याय प्रकाशित किये जा चुके हैं। अब इस खण्ड में तीसरे से छठे अध्याय तक टीका सहित वार्तिक प्रकाशित किया गया है। परिशिष्ट में उद्धरणों की विस्तृत आकर-सूची दी गयी है साथ ही जोड़ी गयी वार्तिक की 186 पृष्ठों की श्लोकार्धसूची इस प्रकाशन की विशेषता मानी जा सकती है। आशा है कि यह विस्तृत सूची अध्येताओं के लिये महत्त्वपूर्ण एवं उपकारक सिद्ध होगी।

३१-उपदेशसाहस्री (संस्कृत एवं हिन्दी टीका)

ग्रन्थकार : भगवत्पाद श्री शंकराचार्य; हिन्दी टीकाकार : गजाननशास्त्री जी मुसलगाँवकर

आकार : 20×30/8 पृष्ठ : 25+336 मूल्य : 250.00

भगवत्पाद श्री शंकराचार्य का यह महत्त्वपूर्ण प्रकरण-ग्रन्थ श्री आनन्दगिरि कृत संस्कृत टीका सहित पहले ही प्रकाशित हो चुका है।

आज के भौतिकतावादी युग में लोग शास्त्रों से तो दूर होते ही जा रहे हैं, यहाँ तक कि संस्कृत भाषा से परिचित नहीं रहे हैं। तथापि अपने उद्धार की इच्छा इन्हें भी रहती है और उनको भी शास्त्रसम्मत विद्या से वंचित नहीं रखना है। इस दृष्टिसे श्रीगजाननशास्त्री मुसलगाँवकर द्वारा श्री आनन्दगिरि एवं रामतीर्थ की टीकाओं के आधार पर की गयी उपदेशसाहस्री की हिन्दी व्याख्या निश्चित ही उपादेय होगी। उपदेशसाहस्री, सिद्धान्तबिन्दु एवं पञ्चीकरण ये तीन ग्रन्थ, श्रवण, मनन एवं निदिध्यासन के ग्रन्थ हैं। उपदेशसाहस्री के पठन से ज्ञानोपयोगी सारी साधना का ज्ञान अवश्य हो जाता है।

श्लोकसूची ने इस प्रकाशन की उपादेयता में वृद्धि की है।

३२-वेदान्तसन्दर्भ (संस्कृत)

भगवत्पाद श्री शंकराचार्य एवं अन्य महापुरुषों द्वारा प्रणीत वेदान्त प्रकरणों एवं स्फुट ग्रन्थों का संकलन

आकार : 20×30/16 पृष्ठ : 607 मूल्य : 55.00

भगवत्पाद श्री शंकराचार्य ने प्रस्थानत्रयी के भाष्य के अतिरिक्त ऐसे बहुत से ग्रन्थों का प्रणयन किया जिन्हें औपनिषद अवान्तर वाक्यों की कोटि में रखा जा सकता है। अनेक परवर्ती महापुरुषों ने भी आत्मा का स्वरूप, ब्रह्म का स्वरूप, जगत् की भ्रमरूपता आदि का स्वतंत्र विवेचन किया है। वेदान्तप्रतिपादक विभिन्न प्रक्रियाओं की कुञ्जी भी इन स्फुट प्रकरण ग्रन्थों में मिल जाती हैं। परवर्ती महापुरुषों के बहुत से ग्रन्थ क्षेत्रविशेष में प्रचलित हैं तो अनेक लुप्तप्राय हैं।

प्रस्तुत संकलन में भगवत्पूज्यपाद श्रीशंकराचार्य के अधिकांश प्रकरण-ग्रन्थों के साथ अन्य ज्ञात-अज्ञात महापुरुषों के ग्रन्थ एकत्रित किये गये हैं। संकलित 67 प्रकरणों में स्वाध्याय की दृष्टि से उपयुक्त कुछ श्रौत एवं पौराणिक ग्रन्थ देकर पुस्तक की उपादेयता को बढ़ाने का प्रयास किया गया है।

३३-पञ्चपादिका (संस्कृत)

पद्मपादाचार्यकृत 'पञ्चपादिका', प्रकाशात्माचार्यकृत 'विवरण', अखण्डानन्दमुनिकृत 'तत्त्वदीपन' तथा विष्णुभट्टोपाध्यायकृत 'ऋजुविवरण'

आकार : 23×36/8-पृष्ठ : 57+688 सम्पादक : एस. सुब्रह्मण्य शास्त्री मूल्य : 600.00

इस ग्रन्थरत्न में भगवान् शंकराचार्यकृत शारीरकमीमांसाभाष्य के प्रथम चार सूत्रों की 'पञ्चपादिका' नामक अतिविशद व्याख्या प्रस्तुत है। भगवान् भाष्यकार के साक्षात् शिष्य होने के कारण ग्रन्थकार आचार्य पद्मपाद भाष्य का आशय समझने वाले सवसे प्रामाणिक सक्षम अनुभवी महात्मा रहे हैं। पञ्चपादिका की प्रकाशात्मश्रीचरणकृत 'विवरण' नामक टीका भी यहाँ संयोजित है, जिसमें साधन-साध्यविषयक ऐसे अनेक रहस्य विस्पष्ट किये गये हैं जो वेदान्तसाहित्य में दुर्लभ हैं। पूर्ण ब्रह्मसूत्र का व्याख्यान न होने पर भी पञ्चपादिका और विवरण में समस्त शाङ्करसिद्धान्त विशेष रूप से उपस्थित किया गया है। विवरण की अखण्डानन्दमुनिकृत 'तत्त्वदीपन' और विष्णुभट्टोपाध्यायकृत 'ऋजुविवरण' इन दो टीकाओं से ग्रन्थ का आशय तो बुद्धिगत होता ही है, वहुतेरे ऐसे तत्त्व भी प्रकाश में आते हैं जिनसे ग्रन्थान्तरों को समझना सम्भव हो जाता है। विस्तृत विषयसूची और उद्धरणसूची से अन्वेषकों का उपकार किया गया है। आंग्ल भूमिका में पञ्चपादिका प्रस्थान का परिचय और भामती प्रस्थान से वैशिष्ट्य समझाया गया है। अतः तत्त्वजिज्ञासुओं तथा अनुसन्धाताओं के लिए यह पुस्तक एक अनिवार्य संग्रह है।

श्रीदक्षिणामूर्तिसंस्कृतग्रन्थमाला
(SHRĪ DAKṢIṆĀMŪRTI-SAṀSKṚTA-GRANTHMĀLĀ)

१–स्तुतिकदम्ब (संस्कृत)

सं. निरञ्जनपीठाधीश्वर श्री स्वामी महेशानन्दगिरि जी

आकार : 23×36/16 पृष्ठ : 194+4 मूल्य : 50.00

प्रस्तुत 'स्तुतिकदम्ब' नित्य पाठ का ग्रन्थ है। वैदिक धर्म केवल बुद्धिविलास नहीं, दैनंदिन जीवन का पाथेय और मार्गदर्शक है। वैदिक धर्म में परमेश्वर के निष्क्रिय-निर्गुण और सक्रिय-सगुण दोनों रूपों का प्राधान्य है। इसी समन्वय को इस संग्रहमें प्रस्तुत किया गया है। यह स्तोत्रसंग्रह संस्कृत भाषा में ही है,तथापि सभी स्तोत्रों की भाषा अति प्राञ्जल एवं प्रासादिक होने से पाठ के साथ ही अर्थ का मनन सहज ही होता रहता है। इसके पाठ से सभी में एक नवीन दृष्टि उत्पन्न होने के साथ मानसिक तेज भी जाग्रत् होगा, जो अब हमें भारतीय राष्ट्र के नव-निर्माणार्थ अत्यधिक अपेक्षित है। शांकरग्रंथावलि में प्रकाशित स्तोत्र एवं लघुप्रकरणों में से चुने एवं अन्य विशिष्ट स्तोत्र, शिवसहस्त्रनाम,, ललितासहस्त्रनाम आदि को इसमें संकलित किया है। श्लोकानुक्रमणिका से ग्रंथ का उपयोग बढ़ गया है।

२–मानसोल्लास–माधुरी (संस्कृत एवं हिन्दी)

निरञ्जनपीठाधीश्वर श्री स्वामी महेशानन्द गिरि जी

आकार : 20×30/16 पृष्ठ : 58+419 मूल्य : 50.00

भगवत्पाद आचार्य के भाष्यग्रन्थ वेदान्त के उत्तम अधिकारियों के लिए सर्वथा उपयुक्त हैं। सर्वज्ञ आचार्य ने मध्यम सामान्य जिज्ञासुओं के लिए वेदान्त के रमणीय प्रकरणों व स्तोत्र ग्रन्थों का ग्रथन किया। प्रस्तुत दशश्लोकात्मक श्रीदक्षिणामूर्तिस्तोत्र उसी शृखंला की एक कड़ी

है। भगवत्पाद श्री शंकराचार्य के प्रधान शिष्य श्रीसुरेश्वराचार्य ने इस पर 'मानसोल्लास' नामक वार्त्तिक की रचना की। संस्कृत भाषा की ओर पराङ्मुखता देखकर पूज्यपाद श्री स्वामी जी महाराज ने इस पर 'माधुरी' नामक हिन्दी व्याख्या की रचना की। श्रीदक्षिणामूर्तिस्तोत्र, मानसोल्लास वार्तिक, स्तोत्र व वार्त्तिक का पदच्छेद, अन्वय, अन्वयार्थ और विस्तृत प्रतिपद व्याख्या से विभूषित यह मानसोल्लासमाधुरी अत्यन्त सुन्दर औरं उपादेय बन गयी है। मूल दशश्लोकी पर 'तत्त्वसुधा' संस्कृत व्याख्या परिशिष्ट में दी है। श्लोकों का अकाराद्यनुक्रम अनुसंधान में उपयोगी होगा।

३-दहरविद्याप्रकाशिका (संस्कृत)

लेखक : परमशिवेन्द्र सरस्वती

सम्पादक : निरञ्जनपीठाधीश्वर श्री स्वामी महेशानन्द गिरि जी

आकार : 20×30/16 पृष्ठ : 26+84 मूल्य : 35.00

लगभग साढ़े तीन सौ वर्ष पुराना यह लघुकाय ग्रन्थरत्न श्रुति, स्मृति, इतिहास, पुराण में विहित दहरोपासना की विशद प्रामाणिक मीमांसा ही नहीं साथ में अनुष्ठानरीति का संक्षेप व विस्तार में प्रकाश करने वाला आलोक भी है। ब्रह्मसूत्र, छांदोग्य, तैत्तिरीय, कैवल्य आदि में बिखरे विषयों को एक सन्दर्भ में व्यवस्थित कर पुराणादि वचनों से उपबृंहित करना ग्रंथकारकी अनुपम विशेषता है। सम्पादक की विस्तृत हिंदी भूमिका से उपासकों को पूर्ण मार्गदर्शन उपलब्ध हो जायेगा।

४-मनीषापंचक (संस्कृत एवं हिन्दी)

निरंजनपीठाधीश्वर आचार्य श्री स्वामी महेशानन्द गिरि

आकार : 20×30/16 पृष्ठ : 28 मूल्य : 5.00

अद्वैतात्मा के साक्षात्कार के बल पर व्यक्त किया निज निश्चय ही यह भगवत्पादीय पंचक है। यद्यपि यह एक मौके पर तत्काल प्रकट किये उद्गार हैं तथापि आचार्य की सहज व्यवस्थित विचारशैली के कारण साधकों के सदा स्मरणीय विषय इसमें संकलित हैं। अनुवादक ने अत्यन्त गंभीर दार्शनिक साधनामय विवेचन संश्लिष्ट भाषा में अभिव्यक्त किया है जिससे कलेवर स्वल्प होने पर भी तलस्पर्शी विचारों से परिपूर्ण है।

५-रुद्र (संस्कृत एवं हिन्दी)

निरंजनपीठाधीश्वर आचार्य श्री स्वामी महेशानन्द गिरि

आकार : 20×30/16 पृष्ठ : 10+638 मूल्य : 100.00

वेदादि सकलशास्त्रों में एकमात्र सर्वप्रपञ्चोपशम परमात्मा का, जो शिव, रुद्र, महेश्वर आदि नामों से व्यवहृत है, स्तवन किया गया है। सारे भूमण्डल में शिवलिङ्ग-पूजा के प्राचीनतम अवशेष उपलब्ध होते हैं। वास्तव में वैदिक यज्ञ में वेदि ही योनि है तथा अग्नि ही ऊर्ध्वलिङ्ग है। ज्ञान में मन ही त्रिशक्तिरूप होने से योनि है तथा ब्रह्माभास ही व्यापक होने से लिङ्ग है। भक्ति में जीव योनि और शिव लिङ्ग हैं। इसी प्रकार पृथ्वी ही योनि और सूर्य लिङ्ग है। न जाने क्यों, अनेक भारतीय भाषाओं में, विशेषतया हिन्दी में, ये दोनों शव्द केवल दैहिक अर्थविशेषों के लिए रूढ हो गये हैं। इस रूढि से हमारे शास्त्रों एवं पूज्य पदार्थों के घृणित अर्थ कुछ नास्तिकों एव विदेशियों ने प्रसारित किये। इन निरर्थक बातों के निराकरण तथा श्रीरुद्राध्याय के याथातथ्य के प्रकाशन के लिए विस्तृत व्याख्या मुमुक्षु जनों को अपरिमित आनन्द देगी। सम्पूर्ण नमकाध्याय का मंत्रार्थ एवं उसके प्रथम सात मंत्रों पर व्याख्यान—इतना ही विषय इस ग्रन्थ में संकलित हो सका है।

६-साधन संग्राम, भाग-१ (हिन्दी)
निरंजनपीठाधीश्वर आचार्य श्री स्वामी महेशानन्द गिरि जी

आकार : 20×30/16 पृष्ठ : 8+480 मूल्य : 100=00

माण्डूक्योपनिषत् के सात मंत्रों का सतत सरित्प्रवाहतुल्य व्यासप्रधान प्रांजल भाषा में आगम-निगम शास्त्रों के गहन चिन्तन से किया गया यह प्रवचन पाठकों को आत्मीय शान्ति अवश्य प्रदान करेगा तथा नवीन दृष्टि से प्राचीन सिद्धान्तों पर विचार करने का मार्ग प्रशस्त करेगा। आधुनिक मनोविज्ञान, समाजशास्त्र आदि की समालोचना-पूर्वक अद्वैतानुसारी दिशानिर्देश इस व्याख्यान का वैशिष्ट्य है। बौद्धिक मानस और कायिक सभी स्तरों पर वेदान्तसाधना का संग्राम लड़कर अज्ञानशत्रु के उन्मूलन के लिये यह साधक को प्रेरित व उत्साहित करने वाला अमूल्य ग्रंथ है।

७-मुण्डक-प्रश्न-उपनिषद् (संस्कृत एवं हिन्दी)
आनन्दगिरिटीकाघटित-शाङ्करभाष्यानुवाद
अनुवादक : श्री स्वामी स्वयंप्रकाश गिरि

आकार : 23×36/16 पृष्ठ : 512 मूल्य : 150.00

प्रस्थानत्रयीभाष्य का चौथाई अर्थ ही बिना आनन्दगिरि टीका के स्पष्ट होता है। हिन्दी में शायद प्रथम बार आचार्य आनन्दगिरि की टीकायुक्त शांकरभाष्य का कोई अंश प्रकाशित हुआ है। इस संस्करण में मुण्डक व प्रश्न उपनिषदों के सम्पूर्ण शांकरभाष्य का अनुवाद, आनन्दगिरिटीका का अनुवाद, विस्तृत व्याख्यात्मक व विवेचनात्मक टिप्पणी तथा दोनों उपनिषदों की व्याख्यारूप विद्यारण्यकृत 'अनुभूतिप्रकाश' के सम्बद्ध अध्यायों का अनुवाद है।

८-शिवानन्दलहरी (संस्कृत एवं हिन्दी)

आचार्य श्रीशंकरभगवत्पाद

व्याख्याता-श्री स्वामी स्वयंप्रकाश गिरि

प्राचीन संस्कृत तथा हिन्दी व्याख्या

आकार : 23×36/16 पृष्ठ : 18+125+54 मूल्य : 50.00

स्मार्त सिद्धान्त के अनुसार वर्णित व अनुष्ठित भक्ति का सूत्रात्मक प्रकाशन आचार्य शंकर के इस स्तोत्र में सुलभ है। वैष्णव मार्ग से स्वतंत्र औपनिषद राजपथ की पद्धतियों में भक्ति सर्वप्रधान है। पुराणों के वर्णनों को हठात् वैखानसादि आगमों के प्रकाश में देखने का रिवाज सा चल पड़ा है, जिससे 'भक्ति' शब्द प्रायः वैष्णवमतानुसारी बिम्ब ही उपस्थित करने लगा है। आचार्यकृत इस विस्तृत स्तोत्र पर शास्त्रीय प्रक्रिया से विशद विवेचन कर हिन्दी भाषा में स्मार्त भक्ति का प्रामाणिक वर्णन करने का प्रयास है। श्लोकों का संगतिप्रदर्शन पूर्वक दण्डान्वय, अनुवाद तथा व्याख्यान प्रांजल भाषा में उपलब्ध है। अज्ञातकर्तृक एक संक्षिप्त अक्षरार्थ प्रकाशित करने वाली संस्कृत टीका परिशिष्ट में एकत्र है। टिप्पणी में छंद अलंकारों का उद्धार किया है।

९-श्वेताश्वतरोपनिषद् (संस्कृत एवं हिन्दी)

निरंजनपीठाधीश्वर श्री स्वामी महेशानन्द गिरि जी

आकार : 20×30/16 पृष्ठ : 20+512 मूल्य : 50.00

श्वेताश्वतर शाखा के मन्त्र, ब्राह्मण व आरण्यक भाग अभी तक उपलब्ध नहीं हो सके हैं, केवल यह उपनिषद् मात्र उपलब्ध है। केवलाद्वैत शिवतत्त्व का प्रतिपादन करते समय यह उपनिषद् सांख्यों के प्रकृतिवाद, योगियों के 26-तत्त्ववाद, पुरुष, ज्ञ, प्रकृति, प्रधान

व्यक्त, अव्यक्त, गुण, लिङ्ग, भाव आदि पारिभाषिक शब्दों की उद्गमस्थली भी है। जगत्कारण, ब्रह्मज्ञान के साधन, ध्यान के अङ्ग, कुण्डलिनीयोग, आसन, प्राणायाम, प्रणव एवं दक्षिणामूर्ति की उपासना, शिवतत्त्वस्वरूप इत्यादि विषयों का वैविध्य ग्रन्थ के सूचीपत्र से जाना जा सकता है।

इस उपनिषद् की अन्वयार्थसहित विशद टीका की कमी पूरी कर पूज्यपाद श्री स्वामी जी महाराज ने मोक्षमार्ग के पथिकों का अहैतुक उपकार किया है। 'अजामेकां......' इत्यादि विवादास्पद मंत्रों का ऊहापोहपूर्वक परिशीलन विद्वानों के लिए भी विचारप्रवर्त्तक सिद्ध होगा।

१०-साधन संग्राम भाग-२ (हिन्दी)

निरंजनपीठाधीश्वर श्री स्वामी महेशानन्द गिरि जी

आकार : 20×30/16 पृष्ठ : 8+93 मूल्य : 40=00

श्वेताश्वतरोपनिषत् प्रथमाध्याय के बारहवें मंत्र की—'एतज्ज्ञेयं नित्यमेवात्मसंस्थं.......' इत्यादि की गुणोपसंहारन्याय से कथा-आख्यायिकाओं द्वारा अलंकृत प्रवचन रूप यह व्याख्या गूढ उलझे विषयों का अत्यंत सरलीकृत प्रभावपूर्ण प्रकाशन है। सुरुचिपूर्ण मनोहर अधुनातन पुरातन दृष्टान्तों के माध्यम से समझाया गया होने के कारण वेदांतविषय इस पुस्तक द्वारा आबालवृद्ध सभी के लिये सुगम्य हो गया है।

११-तत्त्वानुसन्धानम्-अद्वैतचिन्ताकौस्तुभः (संस्कृत एवं हिन्दी)

ग्रन्थकार : श्रीमहादेवानन्दसरस्वती

अनुवादक : श्री पं. गजानन शास्त्री मुसलगाँवकर

आकार : 23×36/8 पृष्ठ : 32+424 मूल्य : 300.00

अठारहवीं सदी का यह प्रकरण अद्वैतदर्शन के सर्वांगीण परिचय तथा साधनापद्धति की समग्र शिक्षा पाने का अतुल्य स्रोत है। वेदान्तदर्शन में प्रचलित सभी प्रक्रियाओं का, प्रमाणों का, ख्यातियों का, उपक्रमादि लिंगों का, प्रामाण्यका, वासनाक्षय-मनोनाश का, समाधिका एवं ऐसे ही अनेक तत्त्वों का आधिकारिक विवरण ग्रंथकार ने मूल व स्वोपज्ञ व्याख्या में प्रस्तुत किया है। विद्वान् अनुवादक ने विषय को स्पष्ट करते हुए सटीक ग्रंथ का भाषान्तरण किया है। श्रीस्वामी महेशानन्द गिरि जी महाराज ने भूमिका में इतिहासक्रम से वेदान्तसाहित्य के विकास का अपूर्व प्रदर्शन किया है जो अनुसन्धान क्षेत्र के विद्वानों के लिये अत्यंत उपयोगी है।

१२-स्तुति-कदम्ब (संस्कृत एवं हिन्दी)

सम्पादक : निरंजनपीठाधीश्वर आचार्य श्री स्वामी महेशानन्द गिरि

अनुवादक : श्री थानेशचन्द्र उप्रैती (सांख्ययोग-साहित्याचार्य)

आकार : 23×36/16 पृष्ठ : 477+12 मूल्य : 150=00

ग्रंथमाला के प्रथम पुष्परूप से प्रकाशित स्तुतिकदम्ब के 63 ग्रंथों का अन्वय सहित अर्थ इसमें प्रकाशित है जिससे स्तोत्रों का अर्थज्ञान पूर्वक पाठ कर भक्तजन कृतार्थ हों। शिवपादादिकेशान्त, केशादिपादान्त आदि दुरूह स्तोत्रों का अनुवादक ने सरल भाषा में अर्थ व्यक्त कर दिया है। जीवन्मुक्तानन्दलहरी, प्रौढानुभूति, सदाचारानुसंधान आदि रहस्यमय प्रकरण वेदान्तरसिकों के लिए अनुवाद सहित उपलब्ध हैं।

१३-गौडपादसार, भाग-१ (संस्कृत एवं हिन्दी)

व्याख्याता : निरंजनपीठाधीश्वर आचार्य श्री स्वामी महेशानन्द गिरि

आकार : 20×26/8 पृष्ठ : 8+535 मूल्य : 250.00

मुमुक्षुओं की विमुक्ति के लिये एक माण्डूक्य को पर्याप्त बताया जाता है जिसका वास्तविक महत्त्व उसकी व्याख्याभूत कारिकाओं द्वारा श्रीमद् गौडपादाचार्य ने अभिव्यक्त किया। अजातवाद का औपनिषद रहस्य माण्डूक्यकारिकाओं में यौक्तिक प्रकार से भी उद्घाटित हुआ है। तात्कालिक न्यायपद्धति के परिप्रेक्ष्य में ग्रंथ को अमूल्य माना जाता है पर दार्शनिक मर्यादाओं के उपेक्षक आलोचक इसके औपनिषदत्व पर शंका उठाते हैं। ब्रह्मविद्वरिष्ठ व्याख्याता ने अत्यन्त सरल भाषा में उपनिषद् व कारिकाओं के शांकरभाष्य का सरस व्याख्यान उपस्थित किया है जिससे ग्रंथ का पंक्तिशः अर्थ तो लगता ही है, गूढ आशय, ऊह-अपोह, आधुनिक शंकाओं के समाधान एवं मुमुक्षूपयोगी साधनानिर्देश भी प्रभूत उपलब्ध हो जाते हैं। प्रथम भाग में उपनिषत् सहित आगमप्रकरण की व्याख्या है। भूमिका में विधुशेखर भट्टाचार्य आदि के आक्षेपों का सप्रमाण निराकरण तथा उपपत्ति के उपयोग पर विशिष्ट प्रकाश डाला गया है।

१४-गौडपादसार, भाग-२ (संस्कृत एवं हिन्दी)

व्याख्याता : निरंजनपीठाधीश्वर आचार्य श्री स्वामी महेशानन्द गिरि

आकार : 20×26/8 पृष्ठ : 3+536 से 1089 मूल्य : 250.00

माण्डूक्यकारिका के वैतथ्य, अद्वैत एवं अलातशान्ति प्रकरणों की प्रत्येक कारिका का भाष्यानुसारी विस्तृत व्याख्यान इस द्वितीय भाग में उपलब्ध है। बोल-चाल की भाषा में इस गंभीरतम दुरूह ग्रंथरत्न का आशय यों प्रकट किया है कि शास्त्रज्ञ इसके सहारे आनंदगिरि आदि टीकाओं का अभिप्राय समझ लें एवं साधारण जिज्ञासु बिना बौद्धिक क्लेश के श्रवण-मनन सम्पन्न कर वह वेदान्त दृष्टि पा ले

जिससे वह अपना सारा जीवन साधनामय बना सके। भाष्यकार द्वारा दिखाई दिशा में व्याख्याता ने आधुनिक चिन्तनों का भी विश्लेषण कर अद्वैत की विजय-पताका फहराई है। विषय-सूची से ग्रंथप्रवेश सरल बनाया है।

१५-नैष्कर्म्यसिद्धिः (संस्कृत एवं हिन्दी)

श्रीचित्सुखाचार्यकृत भावतत्त्वप्रकाशिका सहित

सानुवाद-सम्पादक : डॉ. श्री स्वामी प्रज्ञानानन्द सरस्वती (वेदान्ताचार्य, व्याकरणतीर्थ)

आकार : 23×36/8 पृष्ठ : 428+32 मूल्य : 200=00

श्रीसुरेश्वराचार्यविरचित नैष्कर्म्यसिद्धि 'अशेष-वेदान्त-सार-संग्रह-प्रकरण' है। समग्र वेदान्त दर्शन को गागर में सागर की तरह 423 श्लोकों में भर दिया है। प्रथम अध्याय में मोक्षविषय में पूर्वमीमांसा की स्थापनाओं का शास्त्र-युक्ति पूर्वक मार्मिक खण्डन है। महावाक्यार्थ सुनकर भी समझ क्यों नहीं आता? इसका उत्तर और समझने का उपाय द्वितीयाध्यायका विषय है। वाक्यों का व्याख्यान करने के लिये तीसरा अध्याय है। चौथे अध्याय में विशिष्ट स्पष्टीकरण सहित पूर्वोक्त विषय को संक्षेप में समझाया है।

इस आचार्यकृति पर विश्वविख्यात चित्सुखाचार्य द्वारा कृत भावतत्त्वप्रकाशिका टीका प्रथम बार मुद्रित हुई है। स्वामी प्रज्ञानानन्द सरस्वती ने टिप्पणी, विषयानुक्रम,श्लोकसूची आदि से ग्रंथ को अलंकृत किया है, अनुवाद द्वारा ग्रंथाशय को विस्तार से एवं सन्दर्भान्तरप्रदर्शन से जो स्पष्ट किया है उससे हिन्दी व्याख्या भी एक टीका बन पड़ी है जिससे हिंदी-वेत्ता ही नहीं संस्कृतज्ञ भी लाभ उठा सकते हैं।

१६-केनोपनिषद्भाष्यद्वयम् (संस्कृत एवं हिन्दी)

हिन्दी व्याख्या : श्री स्वामी स्वयंप्रकाश गिरि

आकार : 23×36/8 पृष्ठ : 352 मूल्य : 300.00

सामवेदीय केनोपनिषत् का माहात्म्य इसी से आकलित कर सकते हैं कि प्रातः स्मरणीय आचार्य ने उस पर दो भाष्यों की रचना की। यद्यपि दोनों भाष्य परस्पर पूरक हैं तथापि कुछ आलोचक उनमें विसंगति दिखाने का प्रयास करते हैं।एक अनुपम प्रयोग के रूप में इस संस्करण में दोनों भाष्यों को इस तरह संपादित किया है कि दोनों मिलकर एक ग्रंथ के रूप में सहजता से पढ़े समझे जा सकते हैं। यद्यपि अक्षराकार-भेद से दोनों भाष्य मुद्रित हैं तथापि उनके वाक्य-वाक्यांशों को एक-दूसरे में संग्रथित कर दिया हैं जिससे एकग्रंथता का प्रभाव मिलता है। उद्देश्य है कि भाष्यों में मतभेद नहीं है यह सुस्पष्ट हो तथा केनोपनिषत् का प्रतिभाष्यानुसारीके स्थान पर भाष्यानुसारी अर्थ व्यक्त हो जाये। शीर्षक देकर भाष्य को विभक्त किया गया है। भाष्य का अनुवाद तथा विस्तार में व्याख्यान है। परिशेषमें शंकरानंदी दीपिका दी गयी है।

१७-आत्मपुराण-प्रथम भाग (संस्कृत एवं हिन्दी)

श्री शंकरानन्द सरस्वती

संस्कृत टीका : श्रीरामकृष्ण, हिन्दी व्याख्याता : श्री स्वामी दिव्यानन्द गिरि

आकार : 23×36/8 पृष्ठ : 444 मूल्य : 200.00

'उपनिषद्रत्न' कहलाने वाला आत्मपुराण प्रस्थानत्रयी के अनूठे व्याख्याता श्रीशंकरानंद स्वामी की ऐसी हृदयग्राही दिव्य कृति है कि इसके अवलोकन से बड़े-बड़े विद्वानों को भी लगता है कि अब तक उपनिषदों के रहस्यों से हम अनभिज्ञ ही रहे! सभी प्रधान उपनिषदों के

ब्रह्मविद्या-भाग को विविध प्रकारों से गुणोपसंहारपूर्वक अत्यंत रोचक ढंग से और पूर्ण विस्तार से सुस्पष्ट समझाया गया है। यह श्लोकमय टीका दर्शन के कठिनतम बिन्दुओं को खेल-खेल में समझा देती है। श्रीविश्वेश्वराश्रम के शिष्य श्रीरामकृष्ण पंडित ने 'सत्प्रसव' नामक टीका से इस वरिष्ठ ग्रंथ के प्रत्येक आयाम पर भरपूर प्रकाश डाल कर इसे सहजबोध्य बनाने की असीम कृपा की है। सुप्रतिष्ठित विद्वान् श्री स्वामी दिव्यानन्द गिरि जी ने टीकार्थ-समेत पुराण को हिन्दी में प्रस्तुत किया है व आवश्यक स्पष्टीकरणों से अपनी कृति को ऐसा तैयार किया है कि स्वयं अध्ययन करने वाले इसके अनुशीलन से ग्रंथ पर अधिकार पाने में सक्षम हो सकते हैं।

प्रथम भाग में ऐतरेयोपनिषत् तथा कौषीतकी उपनिषत् के इन्द्र-प्रतर्दन संवाद एवं गार्ग्य-अजातशत्रु संवाद के व्याख्यानरूप प्रथम तीन अध्याय प्रकाशित किये जा रहे हैं।

१८-शिवाष्टोत्तरशतनाम (संस्कृत एवं हिन्दी)

भास्करराय कृत शिवनामकल्पलतालवाल सहित

हिन्दी व्याख्या : श्री स्वामी स्वयं प्रकाश गिरि जी

आकार : 23×36/16 पृष्ठ : 14+212 मूल्य : 60.00

शिवरहस्योक्त शिवाष्टोत्तरशतनाम धार्मिक महत्ता सहित अर्थगांभीर्य के लिए विदित है जिसमें यही पर्याप्त प्रमाण है कि भास्कर राय जैसे उद्भट विद्वान् ने इस पर कलम उठायी। उन्होंने प्रत्येक नाम की व्याख्या एक-एक पद्य में की है और हर पद्य नवीन छंद में रचित है। आगम-निगम-पुराण-तन्त्र-इतिहास-तीर्थक्षेत्रादि अनेक विविध विषयक ज्ञानों का यह आकर छन्दःशास्त्र की भी मूल्यवान् निधि हो गया है। हिन्दी व्याख्यान में नामक्रम पर विचार करते हुए पहले श्री स्वामी महेशानंदगिरि जी महाराज कृत संक्षिप्त टीका दी गयी है, फिर नामों के अभिप्राय समझाकर भास्कर राय कृत श्लोकों का अनुवाद और यथासंभव मूलप्रदर्शनपूर्वक पुराणादि के संदर्भ प्रदर्शित करते हुए श्लोकों में संकेतित विषयों पर विस्तृत चर्चा है। सभी छंदों का स्वरूपपरिचय करा दिया है।

१९-वैदिक-सम्प्रदायान्तर्गता औपनिषददशशान्तयः (संस्कृत एवं हिन्दी)

निरंजनपीठाधीश्वर श्री स्वामी महेशानन्द गिरि जी

आकार : 20×30/16 पृष्ठ : 6+75 मूल्य : 5=00

वेदानुयायियों, विशेषकर शाङ्कर सम्प्रदाय के अध्येताओं में पठन-पाठन के पूर्व व पश्चात् वेदोक्त दश शान्तिमंत्रों का पाठ करने की परम्परा रही है। सर्वसामान्य जन इनके अर्थ से अनभिज्ञ ही रहते हैं। अतः इस ग्रन्थ में 1. शन्नो मित्रः..........., 2. सह नाववतु.........., 3. यश्छन्दसां............., 4. अहं वृक्षस्य............., 5. पूर्णमदः.........., 6. आप्यायन्तु..........., 7. वाङ्मे मनसि............, 8. भद्रं नो............., 9. भद्रं कर्णेभिः............, 10. यो ब्रह्माणं.......... इन औपनिषद शान्तिमन्त्रों की अन्वयार्थसहित विस्तृत व्याख्या पूज्यपाद श्री स्वामी जी महाराज ने अध्यवसायियों के हितार्थ प्रस्तुत की हैं।

20-JĪVANA YAJÑA (English)

Śrī Svāmī Maheśānanda Giri jī

Size : 20x30/16 Page : 13+155 Price : 30.00

Despite its materialistic tendency, the west all the same, deserves our praise for its inquisitiveness and questioning spirit. It looks towards the East, especially the ancient Indian lore if it is yet worthy applying its elixir to the ever-ailing, care-stricken feverish spirit of our age. And often it is shocked to see an astounding heap of argumentative, self-contradictory pantheistic literature. The tragedy is that often the message of our immortal Vedas is misinterpreted and misunderstood. The inquisitive mind is lost in the cobweb of the numerous layers of metaphysical tenets and principles and in absence of proper guidance, is destined to retreat bearing a contemptuous disregard

for this life-sustaining scripture. To nip this misunderstanding in the very bud, one has to strike at the very root of the problem. The Hindu system of devotion is in reality a study of symbols. It is through symbols we unlock our hearts and give expression to our sentiments. Without this primary understanding one will not do justice to this book, Śrī Śvāmī jī Mahārāja has in simple words and lucid style, unravelled very commendably the secrets of life and its mission. The appendix is an unforgettable essence of life' s poetry. It is worthy of transporting the reader in divine land of ecstacy where bliss alone reigns. Jīvana Yajña revitalises our life giving it a genuine, deathless meaning in its journey to the end.

21-LECTURES By ŚRĪ SVĀMĪ MAHEŚĀNANDA GIRI JĪ MAHAMANDALEŚVARA

i)	VEDANTA AND COMMUNAL HARMONY	: Rs. 50/-
ii)	" " MENTAL CULTURE	: " 50/-
iii)	" " MODERN SOCIETY	: " 50/-
iv)	" " INTEGRATION	: " 50/-
v)	" " ART OF LIVING	: " 50/-
vi)	" " PURPOSIVE LIFE	: " 50/-
vii)	" " UNITARY CONSCIOUSNESS	: " 50/-

२२-व्यक्तित्व का विकास (हिन्दी)

निरंजनपीठाधीश्वर श्री स्वामी महेशानन्द गिरि जी

आकार : 23×36/16 पृष्ठ : 6+95 मूल्य : 30=00

जीवन दुर्लभ घटना है, जिसका प्रत्येक क्षण आनन्द की प्राप्ति के लिये है। आनन्द स्वातन्त्र्य में है। स्वतन्त्रता जीवन का आयाम है, पर बन गया है राजनीति का नारा! जीवन या तो उपार्जन का मन्त्र बन गया है या भारभूत बन गया है। ऐसे समय अपने जीवन के बारे में अनेक प्रश्न खड़े हो जाते हैं। व्यक्तित्व क्या है? विकास का दृष्टिकोण क्या हो? व्यक्ति कितना परतन्त्र है? स्वातन्त्र्य कैसे मिले? हमारे अन्दर कौन-सी शक्ति और सामर्थ्य निहित हैं। उनका उपयोग कर व्यक्तित्व का विकास कैसे करें?

ऐसे प्रश्नों का उत्तर पूज्यपाद स्वामी जी महाराज इस पुस्तिका में देते हैं। हम घिनौनी स्वच्छन्दता से हट कर निर्मल स्वतन्त्रता कैसे प्राप्त करें एवं अपने जीवन व राष्ट्र-जीवन को कैसे सफल बनावें इसका विमर्श ही सप्त सुमनों से सुरभित इस पुस्तिका का उद्देश्य है।

२३-गीता प्रवेश (हिन्दी)

निरंजनपीठाधीश्वर आचार्य श्री स्वामी महेशानन्द गिरि जी

आकार : 23×36/16 पृष्ठ : 12+230 मूल्य : 40.00

श्रीमद्भगवद्गीता का इस दृष्टि से विचार करना इस निबन्धावलि का प्रयोजन है कि किस प्रकार वह एक जीवित व्यवहारदर्शन के रूप में हमारे सामने आये एवं क्या वह आज प्रतिदिन के जीवन में मार्गदर्शन में सक्षम है या नहीं। परिचय, मानस, आचार, समाज, राजनीति, परलोक, अध्यात्म, देवधारणा, जीवन्मुक्ति, यज्ञ—इन दस विषयों पर शास्त्राधारित, गंभीर एवं सामयिक विश्लेषण उपस्थित किया गया है। गीता के अक्षरार्थ की अपेक्षा गीताकार के दृष्टिकोण से व्यापक विचार प्रस्तुत है जो चिन्तन और व्यवहार के धरातल पर उत्तम प्रेरक बन गया है।

२४-कठोपनिषद्-१ (प्रथमाध्यायपर्यन्त) (संस्कृत एवं हिन्दी)

निरंजनपीठाधीश्वर श्री स्वामी महेशानन्द गिरि जी

आकार : 23×36/16 पृष्ठ : 24+320 मूल्य : 60.00

कठोपनिषद् की शैली पर ही विश्वरत्न श्रीमद्भगवद्गीता की भित्ति स्थापित है। प्रवक्ता 'यम' व श्रोता 'नचिकेता' के प्रश्नोत्तर रूपी संवादों से दुर्ज्ञेय आत्मतत्त्व को सुगम्य शैली में समझाया गया है। हिन्दी एवं अन्य भाषाओं में विद्वानोंने इस पर स्वसामर्थ्य से सरल व्याख्याएँ प्रस्तुत की हैं परन्तु साङ्गोपाङ्ग विषय का उत्कृष्ट चिन्तन पूज्यपाद महाराजश्री की लेखनी की विशेषता है।

श्री शाङ्करभाष्य, आनन्दगिरि, गोपालेन्द्रटीका, शंकरानन्द, विद्यारण्य, नारायणादि की दीपिका के प्रदीप से उपनिषद् के गूढ रहस्यों को इस पुस्तक में प्रकाशत किया गया है। पदच्छेद, अन्वय अन्वयार्थ से विभूषित विस्तृत व्याख्या मुमुक्षुओं के लिए परम पाथेय है।

२५-ज्ञान-साधना (हिन्दी)

निरंजनपीठाधीश्वर आचार्य श्री स्वामी महेशानन्द गिरि

आकार : 23×36/16 पृष्ठ : 98 मूल्य : 40.00

अपनी जानकारी का वैचारिक विश्लेषण करने का सामर्थ्य मानव की सबसे महत्त्वपूर्ण संपत्ति है। ज्ञानों का संश्लेषण ही सारी प्रगति संभव करता है। अध्यात्म-उन्नति के लिये स्वयं जानने वाले को अपनी परीक्षा करनी पड़ेगी—मैं कौन हूँ? क्यों हूँ? इस परीक्षा का नतीजा ही ज्ञान है। उस तक पहुँचने के निश्चित कदम हैं, ढंग है। भगवद्गीता के तेरहवें अध्याय में ज्ञान के समग्र साधन गिनाये हैं। उन्हीं की प्रवचनात्मक व्याख्या यह पुस्तिका है। दस प्रवचनों में बीसों साधनों के स्वरूप का परिचय देकर उनके अभ्यास के व्यावहारिक तरीके स्पष्ट किये गये हैं ताकि साधक लाभ उठा सकें।

२६-चरम-लक्ष्य (हिन्दी)

निरंजनपीठाधीश्वर आचार्य श्री स्वामी महेशानन्द गिरि

मूल्य : 40.00

आकार : 23×36/16 पृष्ठ : 87

चरम लक्ष्य वही है जिसे पाकर कुछ पाना बाकी नहीं रह जाता, सब प्राप्त हो जाता है। गीता में इसे 'ज्ञेय' कहा, जानने, लायक, जिसे जानना स्वाभाविक अभिलाषा का विषय है। वह स्वातंत्र्य, सुख, अभय आदि की पूर्णता की अन्तिम अवधि है। अज्ञात रहा वह बंधकर है, ज्ञेय हुआ साधना कराता है, ज्ञात होने पर मुक्त है। नौ प्रवचनों में विविध पुराण इतिहास के दृष्टान्तों से और गंभीर शास्त्रीय विवेचन से इस ज्ञेय स्वरूप को व्यक्त कर दिया गया है जिससे वेदान्त के अधिकारी अपने गन्तव्य को स्पष्ट समझ लें, अपनी साधना की दिशा के बारे में जागरूक बनें, भ्रम में न पड़ें।

२७-मानवता की ओर (हिन्दी)

निरंजनपीठाधीश्वर श्री स्वामी महेशानन्द गिरि जी

मूल्य : 40.00

आकार : 20×30/16 पृष्ठ : 10+235

'संघर्ष क्यो?' 'समाज और व्यक्ति' 'सामरस्य का पथ' 'समरसता का प्रभाव' 'दैववाद और संगवाद' 'संगवाद की ओर' 'मानस रोगः भारतीय और पाश्चात्य दृष्टि' 'इच्छा और इच्छाशक्ति' 'आनन्दवाद' इन ग्यारह विषयों पर 'शं नो मित्रः' आदि मंत्र के आधार पर तलस्पर्शी विचार प्रस्तुत है जो आध्यात्मिक क्रान्ति के लिये प्रेरणा का सनातन उत्स है। खण्डन करना सरल है, कठिन तो मण्डन होता है। इस निबंधसंग्रह में सामयिक समस्याओं की आधुनिक राहतमात्र देने वाली प्रक्रियाओं का खोखलापन दिखाकर सनातन निर्मल चिन्तनधारा के पवित्र शीतल जल से उनकी संपूर्ण चिकित्सा का उपाय ही अनुसरणीय है यह सशक्त तर्कों से स्थापित किया है। भारतीयता के पक्षधरों के लिये यह पुस्तक अवश्य पथनिदेशक है।

२८-मंत्रराज प्रकाश, कैवल्योपनिषद्-व्याख्या तथा अष्टादशश्लोकी गीता (संस्कृत एवं हिन्दी)

निरंजनपीठाधीश्वर आचार्य श्री स्वामी महेशानन्द गिरि

आकार : 20×30/16 पृष्ठ : 32 मूल्य : 20.00

पंचाक्षर मंत्र मानवमात्र के अधिकारक्षेत्र में आने वाला कल्याणोपाय है। इसके अर्थ का रहस्य श्रीपद्मपादाचार्य ने 23 कारिकाओं में संकेतित किया है। उन्हीं का हिन्दी अनुवाद मंत्रराजप्रकाश है। इस पर गम्भीर चिन्तन कर ग्रंथोक्त अर्थों को हृदयगत कर लेने के वाद अर्थानुसंधान सहित जप अवश्य जीवन्मुक्ति का प्रयोजक बनता है। कैवल्योपनिषद् सरल संक्षिप्त वेदान्त ग्रन्थ हैं जिसमें साधन-साध्य को पूर्णतः व्यक्त किया गया है। इसे कण्ठ कर अर्थचिन्तन पूर्वक प्रतिदिन पाठ करने से न केवल चित्त निर्मल हो जाता है वरन् उपनिषदों के गहन अभिप्राय समझ में आते जाते हैं। मूल को समझ लिया जाये, चिन्तन साधक अपनी सामर्थ्य से करता रहे, इस उद्देश्य से इस संस्करण में उपनिषद् का सुवोध अनुवाद दिया गया है। तथा संक्षिप्त अर्थ सहित अष्टादश श्लोकी गीता भी संलग्न है।

२९-वचनामृत (हिन्दी)

निरंजनपीठाधीश्वर आचार्य श्री स्वामी महेशानन्द गिरि

आकार : 20×30/16 पृष्ठ : 4+49 मूल्य : 30.00

वर्तमान सदी में दशनाम संन्यासी समाज जिन गिने-चुने महापुरुषों को अपना आदर्श मानता है उनमें श्रीध्रुवेश्वर दक्षिणामूर्तिमठ के महामण्डलेश्वर श्री स्वामी नृसिंह गिरि जी महाराज अग्रगण्य हैं इसमें कोई मतभेद नहीं। आज यतियों में श्रेष्ठ विद्वान् साधक प्रायः उन्ही के कृपापात्र रहे हैं। गृहस्थ समाज में विशेषतः मारवाड़, दिल्ली, पंजाव में भी उनके भक्त ईश्वरप्राप्ति की साधना में संलग्न रहे हैं। उन दिव्य आचार्यचरण की सुमधुर वाणी में कही जीवनोपयोगी शिक्षायें उन्हीं के शब्दों में एकत्र की हैं। विस्तृत भूमिका ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में संन्याससंस्था पर महत्त्वपूर्ण प्रकाश डालती है।

30-OUR DHARMA (English)

Śrī Svāmī Maheshananda Giri

size : 23x36/16 Page : 55 Price : 30.00

The pressing need of our age is a comprehensive, clear and appealing exposition of Sanātana Dharma with a direct approach to its very spirit. The present booklet is directed to serve that simple purpose by pointing toward the salient features of our everlasting Dharma. The intention of the publication is to inform, rather than instruct, the modern day sanātanī that the cause of his attempt to avoid his Dharma is most probably his ignorance about what our Dharma is.

३१-ईशावास्योपनिषद् (संस्कृत एवं हिन्दी)

निरंजनपीठाधीश्वर श्री स्वामी महेशानन्द गिरि

आकार : 20×30/16 पृष्ठ : 24 मूल्य : 20.00

मंत्रोपनिषदों में सर्वप्रधान ईशावास्य है। इसके प्रथम दो मंत्रों में समूचा वैदिक धर्म व दर्शन गर्भित है। बिना अर्थ जाने पाठ करना गधे द्वारा चंदन ढोनेकी तरह बताया गया है। साक्षरता के प्रसार से अनेक लोग विविध ग्रंथों के पाठ में संलग्न दीखते हैं, उन्हें ग्रंथार्थ जानने की भी कोशिश करनी चाहिए। ईशावास्योपनिषत् का सान्वय हिन्दी अनुवाद व संक्षिप्त तात्पर्यार्थ इसी उद्देश्य से प्रकाशित है कि वेदश्रद्धालु इस वेदसारात्मक ग्रन्थ का अभिप्राय समझें और जीवन सफल करें।

३२-बृहदारण्यकसम्बन्धभाष्यवार्तिक (संस्कृत एवं हिन्दी)

अनुवादक : श्री स्वामी स्वयंप्रकाश गिरि

आकार : 22×36/8 पृष्ठ : 522 मूल्य : 270.00

श्रीसुरेश्वराचार्य ने बृहदारण्यक के संबंधभाष्य पर लगभग 1200 श्लोकों में जो ठोस चिन्तन किया है उसकी मिसाल विश्व के किसी व्याख्याग्रंथ की भूमिकासे मिलना दुर्लभ है। विशेषतः पूर्वमीमांसा उसमें भी खासकर प्राभाकरपक्ष का मार्मिक खण्डन करते हुए औपनिषद शांकर दर्शन का यौक्तिक उपस्थापन आचार्य की अद्भुत विशेषता रही जिसका परिचय सम्बंधग्रंथ में स्पष्ट उपलब्ध है। आनन्दगिरि स्वामी ने वार्तिक के प्रत्येक अक्षर का अभिप्राय पूर्ण विस्तार से व्यक्त किया है। उनकी व्याख्या के बिना प्रभाकर-पूर्वपक्ष सर्वथा अवोध्य रहता यह मीमांसाविद्वानों का अनुभव है। हिन्दी में मूल वार्तिक का अनुवाद कर आनन्दगिरि टीका के अनुसार विस्तृत व्याख्या की है जिसमें श्री आनन्दपूर्ण मुनीन्द्र की न्यायकल्पलतिका का भी उपयोग किया है। करीब 300 श्लोकों तक श्रीनृसिंहपुरीकृत एक टीका उपलब्ध हुई है, उसके प्रतिपाद्य विशेषों का भी संग्रह करने का प्रयास रहा है। विषयसूची तथा व्याख्यात मीमांसान्यायों की सूची अध्येताओं के प्रयोगार्थ हैं।

३३-विवरणोपन्यासः (संस्कृत एवं हिन्दी)

श्रीरामानन्दसरस्वतीकृतः

अनुवादक : श्री स्वामी स्वयंप्रकाश गिरि

आकार : 23×36/16 पृष्ठ : 564 मूल्य : 185

भाष्यरत्नप्रभा के यशस्वी लेखक श्रीरामानन्द सरस्वती जी की अत्यन्त उपयोगी यह कृति विवरण प्रस्थान में प्रवेश के लिये अनिवार्य द्वार है। अद्वैत सिद्धांत को प्रक्रियावद्ध दर्शन के रूप में सांगोपांग प्रस्तुत करने वाला संभवतः प्रथम ग्रंथ श्रीप्रकाशात्माचार्य का विवरण ही

है। उसे सही समझना तत्त्वदीपन के बिना प्रायः अशक्य है यह देखकर विद्यारण्य स्वामी ने पंचपादिका-विवरण-तत्त्वदीपन का एक संश्लिष्ट संस्करण तैयार किया विवरणप्रमेयसंग्रह जिसमें अपनी प्रौढ प्रतिभा का आलोक यत्र-तत्र डालकर विषय को और स्पष्टतः समझाया। किन्तु इससे ग्रंथकलेवर सामान्य छात्र के लिये भयावह हो गया! श्रीरामानंद जी ने कृपापूर्वक यह उपन्यास प्रकट किया है जिसमें विवरण का यथाक्रम सारा विषय आ भी गया है लेकिन इस तरह संक्षिप्त होकर कि कहीं कोई दुरूहता नहीं आयी है। शास्त्ररहस्य की गंभीरतम पैठ होने का ही यह फल है कि सरल भाषा में, सुबोध शैली में सारे तत्त्व स्पष्ट एकत्र किये हैं। 170 कारिकाओं में विषय-संग्रह कर गद्य में हर बिन्दु पर विस्तार किया है। इस ग्रन्थ को विवरण की भूमिका के रूप में भी पठनीय समझना चाहिये और विवरण को उपस्थित रखने के लिये द्रुतपाठ का गुटका भी। शीर्षकों से विषय-विभाजन व्यक्त कर दिया है। अनुवाद द्वारा विद्यार्थियों को लाभ होगा।

३४-वेदान्ततत्त्वविवेकः (संस्कृत एवं हिन्दी)

श्रीनृसिंहाश्रमस्वामिविरचित

अनुवादक : श्री स्वामी स्वयंप्रकाश गिरि

आकार : 23×36/16 पृष्ठ : 251 मूल्य : 125

विवरणभावप्रकाशिका, अद्वैतदीपिका, भेदधिक्कार आदि प्रौढ वेदान्तग्रन्थों के रचयिता श्री नृसिंहाश्रम की 'अद्वैतरत्नकोष' कहलाने वाली मनोरम बोधप्रद कृति है—वेदान्ततत्त्वविवेक। प्रायः वेदान्तप्रकरण चार अध्यायों में विभक्त होते हैं किन्तु इस ग्रंथ में दो ही परिच्छेद हैं: त्वम्पदार्थविवेक-प्रधान प्रथम परिच्छेद जिज्ञासाधिकरण के प्रतिपाद्य का विवेचन है। तत्पदार्थशोधन पूर्वक अभेद पर्यन्त वर्णित करना द्वितीय परिच्छेद का कार्य है जिसमें जन्मादि-समन्वयान्त अधिकरणार्थों पर प्रभूत प्रकाश डाला है। सैंकड़ों दार्शनिक पदार्थों की सटीक परिभाषाओं से भरपूर यह ग्रंथ वेदान्तरसिकों और विद्वानों के लिये अवश्य दर्शनीय है। हिन्दी-अनुवाद से गैरसंस्कृतज्ञों को भी पूर्ण लाभ मिलेगा।

३५,३६-सूतसंहिता (दो खण्डो में) (संस्कृत एवं हिन्दी)

माधवाचार्यकृत टीका तथा हिन्दी अनुवाद सहित

अनुवादक : श्री स्वामी स्वयंप्रकाश गिरि

आकार : 23×36/8 पृष्ठ : 1083 मूल्य : 320

स्कन्दपुराण की सूतसंहिता धर्म-अध्यात्म के जगत् में एक लब्धप्रतिष्ठ पाठ्य पुस्तक है। कठिन कर्मकाण्ड में असमर्थ साधक भक्तों का अवलम्ब पुराण ही हैं। धर्म में मन-मानी करना अपराध है। शास्त्र स्वयं सरल उपाय बताता है, उन्हें पता लगाना हमारा फर्ज है। पूजा, तीर्थ, व्रत, ध्यान, जप, स्तोत्र, सदाचार आदि धार्मिक जीवन के सभी पक्षों पर व्यावहारिक शास्त्रीय निर्देश सूतसंहिता में उपलब्ध हैं। राजाज्ञा की तरह विधानमात्र न कर संहिता सभी बातों को युक्ति व दृष्टान्तों से हृदयग्राही बनाने में तत्पर है। उपासकों के लिये इसमें असंख्य दिङ्निर्देश हैं। ब्रह्मगीता में उपनिषदों पर विशद दार्शनिक चिन्तन उपस्थित किया है जिसका भरपूर प्रभाव वादग्रन्थों तक में लक्षित होता है। सूतगीता योग समझने व करने की सफल कुंजी है। इन दो गीताओं से संहिता का वैशिष्ट्य अतुल्य हो गया है। श्रीमाधवाचार्य की वैदुष्यपूर्ण सविस्तर सुस्पष्ट व्याख्या ग्रंथकी हर ग्रंथि को खोलती है तथा तंत्र व दर्शन सम्वन्धी प्रत्येक रहस्यको मूलनिर्देश पूर्वक प्रकट करती है। आगमशास्त्रमें अनिरुद्ध परिचयवश उन्होंने पुराणस्थ हर संकेत का पूरा खुलासा कर दिया है। समझदार साधकों के लिये यह टीका अनिवार्यतः अध्येतव्य है। टीकार्थ का संग्रह करते हुए मूल का आशय हिन्दी में समझाया गया है। साथ ही अनेक विषयोंका विस्तृत विचार उपस्थित किया है ताकि ग्रंथतात्पर्य समझने में सहायता मिले। टिप्पणी में कुछेक स्पष्टीकरणों के अलावा सभी आवश्यक पाठभेद उपस्थित किये गये हैं जिससे अनुसंधाताओं का उपकार होगा। विस्तृत विषयसूची तथा अकारादिक्रम से श्लोकसूची ने ग्रंथ का उपयोग बढ़ा दिया है। ग्रंथ का बड़ा आकार देखकर दो जिल्दों में बाँधा गया है।

३७-शिवभक्तविलास (संस्कृत एवं हिन्दी)

अनुवादक : श्रीस्वामी स्वयंप्रकाश गिरि

आकार : 20×30/8 पृष्ठ : 350 मूल्य : 125=00

कावेरी का पावन तट शिवभक्ति के अलौकिक रससे सुसिंचित है। अनंत शिवभक्तों ने उस क्षेत्र की महिमा बढ़ाई है और न केवल स्वयं के वरन् सारे समाज के कल्याण का मार्ग प्रशस्त किया है। इनमें 63 भक्तों को विशेष आदर मिला है, उन्हें नायन्मार कहते हैं। तमिल का पेरिय पुराणम् उनके जीवन का सर्वांगीण परिचायक है। संस्कृत में संभवतः शिवभक्तविलास ही ऐसा ग्रंथ है। भक्तिरस से ओत प्रोत इस कृति की साहित्यिक छटा भी देखते ही बनती है! वर्णनकौशल और शब्दचयन में लेखक की सिद्धहस्तता चकित करती है। हर चरित की जानकारी शिवभक्ति में अधिकाधिक प्रेरित करती है इसमें कहना ही क्या! हिन्दी में कथासार देकर हिन्दी जगत् को इन विख्यात भक्तों से अवगत कराया है। परिशिष्ट में माणिक्यवाचकर का जीवन दिया है। साथ ही ग्रंथ में उल्लिखित स्थानों का वर्तमान नामादि बताया है ताकि उन स्थलों के दर्शनलाभ से भक्त कृतार्थ हों।

३८-आत्मपुराण, भाग-२ (संस्कृत एवं हिन्दी)

श्री शंकरानन्द सरस्वती; संस्कृत टीका; हिन्दी अनुवाद

आकार-23×36/8 पृष्ठ-696 मूल्य : 320

द्वितीय भाग में आचार्यपाद ने बृहदारण्यक उपनिषत् के गहनतम गाम्भीर्य को चार अध्यायों में मूलक्रमानुसार सुस्पष्ट व्यक्त कर दिया है। महर्षि याज्ञवल्क्य के व्यक्तित्व का देदीप्यमान चित्रण जैसा इस ग्रंथभाग में है ऐसा संभवतः अन्यत्र साहित्य में दुर्लभ है। गार्गी व मैत्रेयी के प्रसंगों में अनेक चौकाने वाले तथ्य उभर कर आये हैं।

३९-आत्मपुराण, भाग-३ (संस्कृत एवं हिन्दी)

श्री शंकरानन्द सरस्वती; संस्कृत टीका; हिन्दी अनुवाद

आकार-23×36/8 पृष्ठ-667 मूल्य : 390.00

श्वेताश्वतर, कठ, तैत्तिरीय-महानारायण एवं गर्भादि ग्यारह उपनिषदों की विशद व्याख्या चार अध्यायात्मक तृतीय भाग में उपलब्ध है। श्वेताश्वतर, महानारायण तथा गर्भादि ग्यारहों पर भगवद्भाष्यकार का व्याख्यान न होने से प्रस्तुत पुराणकार ही संभवतः सबसे प्राचीन साम्प्रदायिक व्याख्याता हैं जिन्होंने इन रहस्यमार्गों की अतीव विस्तृत मीमांसा कर साधकोंपर असीम अनुग्रह किया है।

४०-आत्मपुराण, भाग-४ (संस्कृत एवं हिन्दी)

श्री शंकरानन्द सरस्वती; संस्कृत टीका; हिन्दी अनुवाद

आकार-23×36/8 पृष्ठ-420 मूल्य : 280.00

चतुर्थ भाग के प्रारम्भिक तीन अध्याय छान्दोग्योपनिषद् की और चौथा अध्याय केनोपनिषत् की गंभीर व्याख्या करते हैं। भगवती के ध्यानार्थ उनका स्वरूप उमाहैमवती के प्रसंग में विस्तार से समझाया है। सोलहवें-सत्रहवें अध्याय क्रमशः मुण्डक व प्रश्न उपनिषदों का सारार्थ व्यक्त करते हैं तथा अन्तिम अध्याय नृसिंहतापनीय की विशद विवेचना में उदार है। समस्त पुराण के प्रधान विषय को ईशोपनिषत् की व्याख्या के व्याज से संक्षेप में प्रकट कर इस ग्रंथरत्न का उपसंहार है।

४१-वाक्यवृत्ति (संस्कृत एवं हिन्दी)

संस्कृत टीकाद्वय; हिन्दी व्याख्या

आकार-23×36/8 पृष्ठ-141 मूल्य-80.00

भगवान् भाष्यकार श्री शंकरभगवत्पाद के करकमलों से लिखित प्रकरण-ग्रंथों में जिनके बारे में कोई लेखकविषयक संदेह नहीं उनमें **वाक्यवृत्ति** भी सर्वमान्य है। संक्षेप होने पर भी चिरपरिचित प्रसन्न गंभीर शैली वाला यह ग्रंथमणि अद्वैत जिज्ञासु को समस्त ज्ञेय से अनायास परिचित करा देता है। इस पर आचार्य आनन्द गिरि की संक्षिप्त व्याख्या मूलार्थ सुस्पष्ट कर देती है और विश्वेश्वर पंडित की टीका विषय-मीमांसा में धनी है। हिन्दी-अर्थ उक्त दोनों टीकाओं का संग्रह करते हुए सरल ढंग से शास्त्र-अभिप्राय के प्रकाशन का प्रयास है। तीनों व्याख्याओं सहित वाक्यवृत्ति का अध्ययन तत्त्वविचार में अत्यन्त सहायक सिद्ध होगा।

४२-अमृतपथ (संस्कृत एवं हिन्दी)

निरंजनपीठाधीश्वर श्री स्वामी महेशानन्द गिरिजी

आकार-23×36/16 पृष्ठ-368 मूल्य : 140=00

अध्यात्मसाहित्य में रससिंचन वैदिक-वाङ्मय का वैशिष्ट्य है। समस्त नाम-रूप-कर्म से विरहित परम सत्य का कितना हृदयग्राही वर्णन संभव है यह बृहदारण्यक-उपनिषत् के याज्ञवल्क्यमैत्रेयी संवाद के अध्ययन के बिना समझ सकना असंभव है। किन्तु श्रौतभाषा का निहितार्थ साधारण मति के लिये तिरोहित ही रहता है। आर्ष हृदयों से अनुझंकृत होने वाली हृद्वीणा में ही वह गाम्भीर्य गूँजता है। आचार्यप्रवर श्रीमहेशानन्द गिरि जी महाराज ने प्रवचनों द्वारा उक्त संवाद की गहराई को अत्यन्त सुस्पष्ट कर समस्त आस्तिक जनता पर कृपा की है। प्रवचनों का ही यह मुद्रित रूप अमृत पथ नामसे प्रकाशित है। आचार्यचरण की अनुपम सरल भाषा-शैली में बृहदारण्यक का सार सर्वग्राह्य है।

४३-लघुवासुदेवमननम् एवं सिद्धान्तबिन्दुः (संस्कृत एवं हिन्दी)

हिन्दी व्याख्याता : पं. थानेशचन्द्र उप्रैती (सांख्य-योग-साहित्याचार्य)

आकार-20×30/8 पृष्ठ-281 मूल्य : 120.00

श्रीवासुदेवयतीश्वर-रचित यह प्रकरण अत्यन्त सरल प्रक्रिया से अद्वैतसिद्धान्त को करामलकवत् व्यक्त करता है। साधक विवेक कैसे करे—इस ढंग का ऐसा कदमवार वर्णन अन्यत्र दुर्लभ है। न्याय-मीमांसा आदि की उलझनों से रहित यह ग्रंथ वेदान्त में प्रवेश चाहने वालों के लिये अनुपम है, विशेषतः आजकल के उन साधकों के लिये जो शास्त्रीय पद्धतियों से अपरिचित रहते हैं। संस्कृत से भी अनभिज्ञ जिज्ञासु इस पुस्तक से आत्मलाभ कर सकें इस उद्देश्य से आचार्य महामण्डलेश्वर श्री महेशानन्द गिरि जी महाराज के निर्देशानुसार श्री पंडित थानेश चन्द्र उप्रैती ने राष्ट्र भाषा हिन्दी में इस सद्ग्रन्थ का व्यवस्थित अनुवाद प्रकट किया है। व्याकरण, साहित्य और दर्शनों के प्रकाण्ड विद्वान् होने पर भी उप्रैती जी ने अनुवाद को बोझिल न बना कर जिज्ञासुओं का अत्यन्त उपकार किया है। विद्यार्थी और सामान्य पाठक इस संस्करण से पूर्ण लाभ उठा सकते हैं। परिशिष्ट में विस्तृत टिप्पणों समेत सानुवाद सिद्धान्तविन्दु संयोजित है।

४४-साधन संग्राम, भाग-३ (संस्कृत एवं हिन्दी)

निरंजनपीठाधीश्वर श्री स्वामी महेशानन्द गिरि जी

आकार-20×30/16 पृष्ठ-512 मूल्य : 110.00

ऋग्वेद का नासदीय सूक्त अद्वैत की विश्वप्रसिद्ध अभिव्यक्ति है। इस सूक्त की रहस्यमयी भाषा से प्रायः सभी अध्यात्मवेत्ता अभिभूत रहे हैं और इसमें छिपे भाव खोजने के यत्न में अनेक विद्वानों ने बहुतेरा साहित्य प्रस्तुत किया है। परमश्रद्धेय आचार्य महामण्डलेश्वर श्री

महेशानन्द गिरि जी महाराज ने इस सूक्त द्वारा इसका अभिप्राय यों व्यक्त किया है कि साधक अपने जीवन में सिद्धान्त को प्रतिपल जी सके। अत एव साधन-संग्राम ग्रंथों के क्रम में इस प्रवचन संग्रह का निवेश है। लघुकाय होने पर भी जगन्मिथ्यात्व का विशदीकरण और साथ ही साथ साधनाक्रम का निर्देश इस ग्रंथ का अपूर्व वैशिष्ट्य है। कथात्मक होने से भाषा अत्यंत सरल है।

४९-पुरुषसूक्त (संस्कृत एवं हिन्दी) प्रथम + द्वितीय

निरंजनपीठाधीश्वर श्री स्वामी महेशानन्द गिरि जी

आकार-20×30/16 पृष्ठ-1252 मूल्य : 270.00

शुक्लयजुर्वेद के पुरुषसूक्त की अत्यन्त बृहत् विवेचना श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य महामण्डलेश्वर स्वामी महेशानन्द गिरि जी महाराज ने प्रवचनों के रूप में सन् 1971 ईस्वी में व्यक्त की थी जिसका यह लिपिबद्ध संस्करण पहली बार प्रकाश में आ रहा है। शास्त्रीय मीमांसा से अतिरिक्त समाज-विज्ञान, मनोविज्ञान, राजनीतिशास्त्र, अर्थशास्त्र आदि के सन्दर्भ में वेदान्त का सन्देश खोजकर व्यक्त करना आचार्यचरण का दुर्लभ वैशिष्ट्य आस्तिक समाज में सुविख्यात है। प्राच्य-पाश्चात्य पद्धतियों की निर्मम समीक्षा करते हुए श्रौत-सिद्धान्त की जीवनोपयोगी अभिव्यक्ति आपके प्रवचनों की विशेषता है जो इस ग्रन्थ में प्रतिपृष्ठ दर्शनीय है।

४६,४७-शारीरकमीमांसाभाष्यम् (दो खण्डों में) (संस्कृत)

शांकर भाष्य, प्रकटार्थविवरण, भाष्यभावप्रकाशिका, न्यायनिर्णय, शारीरकन्यायसंग्रह

सम्पादक : श्री मणि द्राविड

आकार-23×36/8 पृष्ठ-1325 मूल्य : 790.00

वेदान्तशास्त्र की जटिल समस्याओं पर गहनतम चिन्तन आचार्य बादरायण-प्रणीत ब्रह्मसूत्रों में ही व्यवस्थित रूप से उपलब्ध है जिस पर प्राचीनतम एवं प्रौढतम भाष्य भगवत्पाद आचार्य श्रीशंकर-कृत शारीरकमीमांसाभाष्य ही है। अनेक दिग्गज वेदान्ताचार्यों ने इस भाष्य की विस्तृत व्याख्याएँ उपस्थित की हैं। दार्शनिक-शिरोमणि श्रीअनुभूतिस्वरूप आचार्य का प्रकटार्थविवरण समस्त भाष्य की अद्भुत टीका है जो परवर्ती सभी व्याख्याताओं के लिये आकर बन गयी है। तत्त्वप्रदीपिकाकार श्रीचित्सुख आचार्य की भाष्यभावप्रकाशिका अपने सम्पूर्ण रूप में सर्वप्रथम प्रकाशित की जा रही है। ग्रन्थकार का गौरव ही कृति के महत्त्व का पर्याप्त सूचक है। प्रस्थानत्रयीभाष्यव्याख्याता श्री आनन्द गिरि आचार्य का न्यायनिर्णय तो भाष्य के प्रत्येक शब्द के महत्त्व को हृदयंगम कराने वाला अनिवार्य व्याख्यान सुप्रसिद्ध है। इनसे अतिरिक्त, प्रत्येक अधिकरण के निष्कर्षरूप न्यायों का शास्त्रीय उपस्थापन श्रीप्रकाशात्मा आचार्य के शारीरकन्यायसंग्रह में प्रकाशत है जिसका उपजीवन अनन्तरवर्ती सभी आचार्यों ने किया है। अद्वैत दर्शन के प्रामाणिक बोधके लिये इन ग्रन्थरत्नों का परिशीलन साम्प्रदायिकों में आवश्यक माना जाता है। उक्त सभी ग्रंथों के, विशेषतः प्रकटार्थके, दुरूह स्थलों पर तथा संदिग्ध पाठों पर तुलनात्मक दृष्टि से विवेचन पण्डित श्री मणि द्राविड ने टिप्पण में प्रस्तुत किया है। अनेक सूचियों से अलंकृत खण्डद्वयात्मक यह संस्करण सभी अध्येताओं के लिये संग्राह्य है।

४८-शक्तिपूजा (हिन्दी)

निरंजनपीठाधीश्वर आचार्य श्री स्वामी महेशानन्द गिरि जी

आकार-20×30/16 पृष्ठ-267 मूल्य : 70.00

स्कन्दपुराण की सूत संहिता में प्रतिपादित 'शक्ति पूजा' के विचार में शक्ति का संवित् स्वरूप, आसक्तिका प्रभाव, राजयोग, परमेश्वर यश, माता की पूज्यता, बाह्य-आन्तर पूजा, पूजक भेद, नादोपासना, परा-पश्यन्ती आदि स्तर, साधना में आनन्द आदि गम्भीर विषयों पर विश्लेषणात्मक चिन्तन की प्रवचनात्मक अभिव्यक्ति इस ग्रन्थ का कलेवर है। परिशिष्ट में 'सनातन धर्म का सन्देश' तथा 'सनातन धर्म और मानसिक शान्ति' विषयों पर व्याख्यान उपलब्ध हैं।

४९-कठोपनिषद-द्वितीय अध्याय (संस्कृत एवं हिन्दी)

व्याख्याता : निरंजनपीठाधीश्वर आचार्य श्री स्वामी महेशानन्द गिरि जी

आकार-23×36/16 पृष्ठ-505 मूल्य : 160.00

कठोपनिषद् के द्वितीय अध्याय में धीरता, निरोध का उपयोग, 'पर' की अवधारणा, पुनर्जन्मवाद, ईश्वरध्यान, अंगुष्टमात्र पुरुष, 'हंसः शुचिषद्' आदि रहस्यमय मन्त्र, जीव की गति, शाश्वत शान्ति, वृक्ष-रूपक से संसार-वर्णन, ईश्वर से भय, आत्मबोध के उपाय, लय-चिन्तन, योग, अनुशासन आदि गम्भीर विषय व्यक्त हैं जिनका विस्तृत विश्लेषण भाष्यादि व्याख्याओं के अनुसार एवं आधुनिक यौक्तिक ढंग से आचार्यचरण ने उपस्थित कर मुमुक्षुजनों पर कृपा की है।

५०-साधना (हिन्दी)

निरंजनपीठाधीश्वर आचार्य श्री स्वामी महेशानन्द गिरि जी

आकार-23×36/16 पृष्ठ-195 मूल्य : 50.00

छान्दोग्योपनिषत् में नारद जी एक उत्तम साधक के रूप में उपस्थापित किये गये हैं अतः उनकी श्रेष्ठता व्यक्त करने के बहाने आचार्यचरण ने अधिकारिगुणों का अत्यन्त सरल व सरस परिचय प्रवचनों द्वारा दिया था, उन प्रवचनों का संक्षिप्त रूप इस पुस्तक में उपलब्ध है।

५१-मानव और समाज (हिन्दी)

निरंजनपीठाधीश्वर आचार्य श्री स्वामी महेशानन्द गिरि जी

आकार-20×30/16 पृष्ठ-184 मूल्य : 50.00

नर्य, मर्य और दिव्य संस्कृतियों का विश्लेषण कर मानव-समाज के सम्बन्धों का सर्वांगीण विवेचन इस ग्रन्थ में प्रकट किया है। समाजशास्त्र, मनोविज्ञान आदि के परिप्रेक्ष्य में प्राचीन शास्त्रों द्वारा प्रशंसित व्यवस्थाओं का उपपादन करते हुए इस पेचीदे विषय को व्याख्यानों के रूप में व्यक्त किया है।

५२-श्री शिवसहस्रनामसङ्ग्रहः (संस्कृत)

आकार-23×36/16–पृष्ठ-386 सम्पादक : श्री स्वामी मधुसूदनानन्द गिरि मूल्य : 85=00

विभिन्न पुराणों में एवं महाभारत में तथा शिवरहस्य में भगवान् शंकर के सहस्रनाम उपलब्ध हैं। परमपूज्य श्री स्वामी महेशानन्द गिरि जी महाराज के निर्देशानुसार इन शिवसहस्रनामों को संकलित कर तथा नामावली भी जोड़कर वेदान्ताचार्य श्री मधुसूदनानन्द गिरि जी ने यह संग्रह तैयार किया है जिससे सभी शिवभक्त शिवार्चना में प्रामाणिक सहस्रनामों का प्रयोग कर सकते हैं।

५३-मानसोल्लासः (संस्कृत)

टीकाकार : श्रीमद् अनन्तकृष्णशास्त्री

आकार-20×30/8–पृष्ठ-156 सम्पादक : श्री सच्चिदानन्द मिश्र मूल्य : 50=00

भगवान् शंकराचार्यकृत श्रीदक्षिणामूर्तिस्तोत्र (दशश्लोकी) वेदान्ततत्त्वों का एवं साधना का सारगर्भित संग्रह है अतः आचार्य सुरेश्वर का उस पर 'मानसोल्लास' नामक प्रसिद्ध वार्तिक है जिसकी श्रीरामतीर्थकृत व्याख्या सुलभ है। प्रायः पचास वर्ष पूर्व श्रीस्वामी महेशानन्द गिरि जी महाराज के अनुरोध से श्री अनन्तकृष्ण शास्त्री ने वार्तिक पर विस्तृत व्याख्या लिखी जो पहली बार प्रकाशित की जा रही है। कुछ आधुनिक मानसोल्लास को प्रत्यभिज्ञादर्शन का ग्रन्थ बताते हैं, उनका खण्डन कर यह शांकर सम्प्रदायका ही ग्रन्थ है इसे शास्त्री जी ने ऊहापोह से स्थापित किया है। डॉ. सच्चिदानन्द मिश्र (प्राध्यापक बनारस हिन्दू वि.वि.) ने, टिप्पणी व अनुबन्धों समेत टीका का सम्पादित रूप उपस्थित किया है। मानसोल्लास का गम्भीर आशय समझने के इच्छुकों के लिए यह ग्रन्थ अवश्य पठनीय है।

५४-श्रीपञ्चाक्षरी विद्या (संस्कृत एवं हिन्दी)

निरंजनपीठाधीश्वर श्रीस्वामी महेशानन्द गिरि जी

आकार-20×30/16 | पृष्ठ-136 | मूल्य : 25=00

शैवसर्वस्व पंचाक्षर मन्त्र की रहस्यात्मकता का विशद विवरण आचार्य पद्मपाद ने तेइस श्लोकों में किया है। व्याकरण आदि शास्त्रों के अवलम्ब से मन्त्र की नौ व्याख्यायें वहाँ प्रकट की हैं। सामान्यमति लोगों के लिए आचार्यवचन भी दुर्बोध हो गये हैं। यह देखकर पंडित श्री हरिनामदत्त ने 'सुवोधिनी' नामक व्याख्या से उसे समलंकृत किया। आचार्य महामण्डलेश्वर श्री 108 स्वामी महेशानन्द गिरि जी महाराज ने 'मन्त्रराजप्रकाश' नाम से पद्मपादीय श्लोकों की हिन्दी व्याख्या प्रकाशित की थी। इस प्रकाशन में मन्त्रराजप्रकाश, सुबोधिनी और सुवोधिनी की विस्तृत हिन्दी व्याख्या संकलित है। प्रस्थानत्रयी तात्पर्य निर्णय एवं शारीरकमीमांसा के सव अधिकरणों का सिद्धान्त संग्रह इस व्याख्या की विशेषताएँ हैं। पंचाक्षर मंत्र के गुह्य भावों के जिज्ञासुओं के लिए यह प्रामाणिक संग्राह्य ग्रन्थ है।

५५-देव्यपराधक्षमापनस्तोत्र तथा आत्मार्पणस्तुति (संस्कृत एवं हिन्दी)

व्याख्या : श्री १०८ स्वामी महेशानन्द गिरि जी महाराज आचार्य महामण्डलेश्वर

आकार-20×30/16 | पृष्ठ-192 | मूल्य : 70=00

सभी देवीभक्त देव्यपराधक्षमापनस्तोत्र का पाठ करते ही हैं एवं श्री अप्पय दीक्षित द्वारा रचित आत्मार्पणस्तुति शिवभक्तों के लिए अज्ञात नहीं है। आचार्यचरण ने इन दोनों स्तोत्रों पर 1989 में व्याख्यान दिये थे जिनका संक्षेप में संकलन हो पाया जिसे पुस्तकाकार में अब प्रकाशित किया है। स्तोत्रों के अनुवाद के अतिरिक्त प्रत्येक श्लोक के गूढ़ अभिप्राय को स्पष्टतः प्रतिपादित कर इन दोनों रचनाओं का महत्त्व इस प्रकाशन में स्फुट किया गया है।

५६-बालव्युत्पत्तिः (संस्कृत)

आकार-23×36/16-पृष्ठ-90 श्री विश्वनाथ धिताल : (लेखक+सम्पादक) मूल्य : 60=00

न्याय शास्त्र में प्रवेशार्थी जिज्ञासुओं के सुविधा के लिए अनेक लक्षणों का संग्रह समन्वय सहित किया गया है। समन्वय सहित साधर्म्य वैधर्म्य का निरूपण एवं शाब्दबोध पद्धति एवं नियमादि का भी संग्रह किया गया है।

५७-'वेदान्तपरिभाषा' (संस्कृत)

आकार-23×36/16-पृष्ठ-82 सम्पादक : श्री विश्वनाथ धिताल मूल्य : 20=00

यद्यपि वेदान्त परिभाषा अनेक टीकाओं के साथ उपलब्ध है। तथापि आरम्भिक विद्यार्थियों के सुविधा के लिए एवं दृष्टि कमजोर व्यक्तियों के लिए बड़े अक्षरों में मूलमात्र ग्रन्थ प्रकाशित है।

५८-श्रीकृष्ण-सन्देश (तीन खण्ड) (हिन्दी)

आकार-20×30/8 पृष्ठ-1648 मूल्य : 900.00

श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य महामण्डलेश्वर जी महाराज ने श्रीमद्भगवद्गीता को सरल सरस व्याख्यानों द्वारा सर्वसाधारण के लिए समझाया है। इस विवरण में शांकरभाष्य का प्रायः सारा भाव एकत्र किया गया है, व्याख्यान्तरों की विशेष बातें सूचित हैं तथा आज के सन्दर्भ में गीता का महत्त्व प्रकट किया है। गीतातात्पर्य भाष्यानुसार ही उचित है इस निश्चय से की यह व्याख्या सन् 2004-5 में महाराजश्री के श्रीमुख से व्यक्त हुई अतः उनकी परिपक्वावस्था की रचना है। इसके अनन्तर पंचदशी की सम्पूर्ण व्याख्या उन्होंने की तथा कुछ उपनिषद्-अध्यायों को समझाया। उनके अनुभव से सिंचित इस टीका के अध्ययन से न केवल जिज्ञासुओं को लाभ होगा, विद्वानों को भी अतिगम्भीर मन्तव्य उपलब्ध होंगे।

५९-वेदान्तसार (संस्कृत एवं हिन्दी)

रचयिता : श्रीसदानन्द यति, 'बालबोधिनी'कार : आपदेव

हिन्दी व्याख्याता एवं सम्पादक : डॉ. सच्चिदानन्द मिश्र

आकार-20×30/8 पृष्ठ-188 मूल्य : 200=00

सदानन्द योगीन्द्र द्वारा प्रणीत 'वेतान्तसार' अद्वैतसिद्धान्त की मूलभूत अवधारणाओं को वहुत संक्षेप और सुग्राह्य रूप में उपस्थापित करता है अतः वेदान्तदर्शन की 'लघुसिद्धान्तकौमुदी' के रूप में यह अत्यन्त प्रतिष्ठित एवं प्रचलित है। शास्त्रार्थोपयोगी विवादों को महत्त्व दिये वगेर पूर्ण प्रतिपाद्य का स्पष्टीकरण करने में समर्थ इस ग्रन्थ पर अनेक टीकाएँ उपलब्ध हैं जिनमें मीमांसाशास्त्री आपदेव कृत बालबोधिनी पूर्व में प्रकाशित हो चुकने पर भी सम्भवतः दुर्लभतावश कम प्रचलित रही है। इसमें प्रतिपंक्ति व्याख्या के बजाये उन्हीं विन्दुओं पर विशेष चिन्तन है जो प्रारम्भिक जिज्ञासु के लिए ज्ञातव्य हैं। मीमांसक होने पर भी यहाँ आपदेव ने न्यायशैली में विवेचन किया है। विविध प्रस्थानों के स्वरूप का वोध इस टीका से सुगम होगा। मूल के दुर्वोध प्रसंगों का विशेष व्याख्यान इसका वैशिष्ट्य है। डॉ. सच्चिदानन्द मिश्र ने विस्तृत स्पष्टीकरणात्मक अनुवाद से मूल एवं टीका का सारा कथ्य तो व्यक्त किया है ही, वेदान्त के गम्भीर चिन्तन के इच्छुकों के लिए सक्षम सम्वल भी उपलब्ध कराया है।

६०-अद्वैतसिद्धि (संस्कृत एवं हिन्दी)
श्रीब्रह्मानन्दसरस्वती रचित लघुचन्द्रिका सहित
सटिप्पण व्याख्याकार श्रीस्वामिविशुद्धानन्दगिरिजी

आकार-20×30/8 पृष्ठ-159 मूल्य : 75=00

आचार्यप्रवर श्रीमत्स्वामिमधुसूदनसरस्वती जी के द्वारा रचित अद्वैतसिद्धि जिस प्रकार से परमतनिराकरण और स्वमतस्थापना के द्वारा सर्वोत्कृष्टता को प्राप्त करती है, ठीक उसी प्रकार से अन्य कोई भी निबन्ध सर्वोत्कृष्टता को प्राप्त नहीं करता है। यह एक मननात्मक ग्रन्थ है। इसके अन्तर्गत चार परिच्छेद है। प्रथम परिच्छेद के प्रारम्भ में श्रीब्रह्मानन्दसरस्वती के द्वारा रचित लघुचन्द्रिका नामक टीका के पक्षतावच्छेदक पर्यन्त भाग को आचार्य-द्वितीय वर्ष की परीक्षा में रखा गया है। जिज्ञासुओं को सुगमतापूर्वक बोध हो—इसको लक्ष्य करके अद्वैतसिद्धि और लघुचन्द्रिका के मूल का अनुवाद कैलासविद्याप्रकाशिका नामक टीका में किया गया है। लघुचन्द्रिका के सहित मूल को विस्तार से स्पष्ट करने के लिये सत्यानन्दप्रबोधिका टीका दी गई है। अद्वैतसिद्धि और लघुचन्द्रिका के दुरूह स्थलों को स्पष्ट करने के लिये टिप्पणियाँ दी गई हैं और अन्त में विद्यार्थिओं के लिये प्रश्नोत्तरी भी दी गई है। श्रीस्वामिविशुद्धानन्दगिरिजी के द्वारा रचित कैलासविद्याप्रकाशिका, सत्यानन्दप्रबोधिका, गुरुप्रसादिनी टिप्पणी के माध्यम से उन्होंने अद्वैतसिद्धि का युक्तिपूर्वक सुसंगत निरूपण किया है। अतः विद्वानों के लिये यह ग्रन्थ अवश्य पथनिर्देशक होगा।

६१-अद्वैतसिद्धि, भाग-१ (संस्कृत एवं हिन्दी)

सानुवाद व्याख्याकार-श्रीस्वामिविशुद्धानन्दगिरिजी

आकार-20×30/8 पृष्ठ-317 मूल्य : 150=00

मननात्मक अद्वैतसिद्धि के प्रथम भाग में 'विमतं मिथ्या दृश्यत्वात्' इस प्रयोग के द्वारा प्रपञ्चात्मक द्वैतगत मिथ्यात्व निरूपण के माध्यम से अद्वैतनिश्चय का प्रतिपादन किया गया है। 'वाक्यार्थवोध के प्रति वाक्यार्थ घटक पदार्थों का ज्ञान होता है'—इस न्याय का अनुसरण करते हुए उक्त प्रयोग के घटक पक्ष साध्य हेतु का क्रमशः निरूपण किया गया है। इसके अनन्तर उक्त प्रयोग के हेतुओं में व्यभिचारादि दोष नहीं है—इसका प्रतिपादन किया गया है। जिज्ञासुओं को सहजतापूर्वक बोध हो, इसके लिये मूलानुवाद 'कैलासविद्याप्रकाशिका' में दिया गया है तथा विस्तार से विचार 'सत्यानन्दप्रबोधिका' में दिया गया है। इस प्रकार उक्त दोनों टीकाओं के माध्यम से श्रीस्वामिविशुद्धानन्दगिरिजी ने ग्रन्थाशय को सुगम बना दिया है। विद्यार्थिओं के लिये प्रश्नोत्तरी भी दी गई है।

६२-अद्वैतसिद्धि, भाग-२ (संस्कृत एवं हिन्दी)

व्याख्याकार-श्रीस्वामिविशुद्धानन्दगिरिजी

आकार-20×30/8 पृष्ठ-351 मूल्य : 150=00

मननात्मक अद्वैतसिद्धि के द्वितीय भाग में प्रपञ्चात्मक द्वैतगत मिथ्यात्व को सिद्ध करने के लिये अनेक प्रयोगों को दिखलाया गया है। उक्त अनुमानों का आगमादि से बाध नहीं होता है—इसका निरूपण दिया गया है। प्रपञ्चगत मिथ्यात्व होने पर भी अर्थक्रियाकारित्वादि की उपपत्ति होती है और प्रतिकर्मव्यवस्था की भी उपपत्ति होती है—इसको स्पष्ट किया गया है। मिथ्यात्वसाधक प्रयोगों में अनुकूल तर्क का प्रदर्शन तथा प्रतिकूल तर्क का निराकरण एवं श्रुत्यादि के समर्थन का भी प्रतिपादन किया गया है। उत्तमं जिज्ञासुओं के उपयोगी जो

दृष्टिसृष्टिप्रक्रिया है—वह श्रुतिसूत्रादि सम्मत है और प्रपञ्चमिथ्यात्व सिद्धि के अनुकूल है—इसको भी इस भाग में दिखलाया गया है। व्याख्याकार श्रीस्वामिविशुद्धानन्दगिरिजी ने ग्रन्थ के भावों को स्पष्ट करने के लिये विस्तृत व्याख्या की है। इससे पाठकों को अवश्य लाभ होगा।

६३-अद्वैतसिद्धि, भाग-३ (संस्कृत एवं हिन्दी)

व्याख्याकार-श्रीस्वामिविशुद्धानन्दगिरिजी

आकार-20×30/8 पृष्ठ-379 मूल्य : 150=00

अद्वैतसिद्धि के इस भाग में उत्तम जिज्ञासुओं को लक्ष्य करके सर्वप्रथम एकजीववाद का मार्मिक रूप से निरूपण किया गया है। सम्पूर्ण अनर्थों का कारण जो अज्ञान है, उसका लक्षण क्या है? उसकी उपपत्ति कैसे होती है? इसको स्पष्ट करते हुए इस भाग में अद्वैतसिद्धिकार ने स्वपाण्डित्य का प्रदर्शन करते हुए नैयायिकों के प्रागभावादि का भी खण्डन कर दिया है। अविद्या के आश्रय और विषय पर भी विचार किया गया है। अहम्-पदार्थ क्या है? इस पर भी विस्तार से चर्चा की गई है। इसके बाद कुछेक पारिभाषिक एवं प्रक्रियोपयोगी पदार्थों का भी निर्वचन किया गया है। सत्यानन्दप्रबोधिकाकार श्रीस्वामिविशुद्धानन्दगिरिजी ने सभी पदार्थों की व्याख्या विस्तृत रूप से दी है। इससे अधिकारियों को अवश्य लाभ होगा।

६४-शिवानन्दलहरी-प्रवचन (हिन्दी)

श्री १००८ स्वामी महेशानन्द गिरिजी महाराज

आकार-23×36/16 पृष्ठ-244 मूल्य : 100=00

आचार्य श्रीशंकर ने सर्वांगीण अध्यात्मसाधना के प्रतिपादन के क्रम में भक्तिमार्ग के स्पष्टीकरणार्थ अनेक स्तोत्रात्मक प्रबन्ध रचे जिनमें शिवानन्दलहरी समधिक विषयग्राहक एवं उद्बोधक है। आचार्य श्रीस्वामी महेशानन्द गिरिजी महाराज ने अनेक श्लोकों पर विविध

प्रसंगों में विचार किया जो तत्तत् प्रवचन-पुस्तकों में उपलब्ध है किन्तु प्रारम्भिक सत्रह श्लोकों पर उनके क्रमवद्ध प्रवचन इस संस्करण में प्रकाशित हैं जिनमें स्मार्त्त भक्ति का स्वरूप जीवन्तरूप में प्रकट है। इस परम्परा में परमेश्वर को प्रत्यग्रूप से ग्रहण करना आवश्यक है, यह तथ्य द्वितीयश्लोक के व्याख्यान में स्पष्ट किया है। पढ़ना-मात्र हानिकर कैसे हो सकता है यह भी वहाँ समझाया है। त्रयी (श्लो. 3) पर भी चिन्तन गम्भीर है। वेदश्रद्धा का रूप (पृ. 85) वेदानुसरण है। इसके लिये तर्क उपयोगी (पृ. 93) है। कथा सुनने की विडम्बना व्यक्त (पृ. 120) की गयी है। नर-का विचार (पृ. 157) समझने योग्य है। समस्त विचारकों एवं भक्तिभाव से सम्पन्न चिन्तकों के लिये यह पुस्तक अत्युपयोगी है।

६९-पञ्चीकरण (संस्कृत एवं हिन्दी)

श्री स्वामी महेशानन्द गिरिजी महाराज

आकार-20×30/16 पृष्ठ-63 मूल्य : 30=00

वेदान्त-साधकों में उपलब्ध पंचीकरण एवं उसके वार्त्तिक तथा आनन्दगिरीय विवरण का यह सानुवाद संस्करण अद्वैत वोध में प्रवेशार्थियों द्वारा स्वागतयोग्य है। न्यूनतम परिभाषाओं का सहारा लिये अनुभवारूढ प्रक्रिया से अखण्ड वस्तु का साक्षात्कार पाया जा सकता है—यह इस लघु प्रकरण के परिशीलन से व्यक्त होता है। विवरण में विशेषकर विषय का संश्लिष्ट उपस्थापन इस तरह है कि उतने मात्र को हृदयंगम कर चिन्तनलीन साधक आत्मावगति में समर्थ हो सकता है। आंग्ल भूमिका में वेदान्त का समयोचित विकासोन्मुख दृष्टिकोण प्रतिपादित है। जो उसे रूढिवाद से सुरक्षित रखता है।

६६-ज्ञानाङ्कुशम् (संस्कृत एवं हिन्दी)

श्री स्वामी महेशानन्द गिरिजी महाराज

आकार-20×30/16 पृष्ठ-153 मूल्य : 70=00

'ज्ञानांकुश' मनःशान्ति पाने के अचूक नुस्खों का कोष है।वर्त्तमान युग में सभी वर्ग अशांतिग्रस्त और पराधीनता के शिकार हैं। अध्यात्मशास्त्र इन दोनों समस्याओं के समाधान के लिये सबल उपाय सुझाता है।मन का विक्षेप दूर करने में हम स्वयं क्या कर सकते हैं—यह इस ग्रन्थ का सक्षम सन्देश है। इस पर प्राचीन विवरण था ही जिसके अनुसारे आचार्यचरण ने इस प्रकरण पर प्रवचनात्मक व्याख्या का प्रणयन किया। न केवल साधकों वरन् मनश्चिकित्सकों एवं मनोरोगियों को भी इन प्रवचनों से अत्यन्त कारगर प्रकाश प्राप्त होगा जो अशान्ति दूर कर अन्ततः परमार्थ कल्याण में प्रतिष्ठा देगा। सविवरण मूल भी वर्त्तमान में, इस संस्करण से अतिरिक्त प्रायः दुर्लभ है।

६७-अध्यात्मपटल (संस्कृत एवं हिन्दी)

श्री स्वामी महेशानन्द गिरिजी महाराज

आकार-23×36/16 पृष्ठ-197 मूल्य : 80=00

मोक्ष-पथ का पथिक जितना मानस-विचलन से प्रतिरोध अनुभव करता है उतना बाह्य से नहीं अतः उसके लिये मनोनियमन अनिवार्य है जो विस्तृत दिशानिर्देश चाहता है। दर्शन का उपस्थापन करते हुए भी आचार्यों ने यद्यपि यह आयाम अछूता नहीं छोड़ा है, जैसा कि भाष्य-अध्येताओं से छिपा नहीं है, तथापि ऐसे उपदेशों का संगृहीत रूप सभी के लिये उपादेय है जिससे अपने जीवन में प्रतिदिन आते विक्षेपों का सामना सहजता से किया जा सके। आचार्यचरण ने महर्षि आपस्तम्ब के सूत्रों पर आचार्य श्रीशंकर के नाम से प्रचलित व्याख्यानानुसार प्रवचनों के माध्यम से उन सभी धर्मों का स्पष्टीकरण सुलभ कराया है, जो किसी भी अध्यात्ममार्गी के लिये पाथेय है। सम्भवतः अध्यात्मपटल का यह एकमात्र हिन्दी उपस्थापन है। मूलसहित मुद्रित होने से आचार्यकृत व्याख्यान का यह अतिसुलभ संस्करण है।

६८-चिदानन्दलहरी (हिन्दी)

स्वामी महेशानन्द गिरिजी महाराज

आकार-20×30/8 पृष्ठ-566 मूल्य : 150=00

आचार्य श्रीशंकर की प्रौढ मनीषा के विभिन्न प्रतिबिम्बों में अनुपम है 'सौन्दर्यलहरी' जो तन्त्रशास्त्र एवं साहित्य के गुह्य मार्मिक रहस्यों का अगाध आकर है। उसी के 'सुधासिन्धोर्मध्ये' आदि श्लोक पर समस्त सम्भव दृष्टिकोण से चिन्तन जनसामान्य के लिये सुवोध शैली में व्यक्त किया आचार्य श्री स्वामी महेशानन्द गिरिजी महाराज ने व्याख्यानों के माध्यम से। उक्त श्लोक के निमित्त से साधना की अनेक सीढियाँ पार करने के कारगर उपायों का विधान करता यह ग्रन्थरत्न सभी अध्यात्म-जिज्ञासुओं के लिये अनिवार्य अध्ययन का अंश होना निश्चित है।

६९-पंचपादिका (मूल मात्रम्) (संस्कृत)

सम्पादक-स्वामी मधुसूदनानन्द गिरि

आकार-23×36/16 पृष्ठ-180 मूल्य : 100=00

वेदान्त साहित्य में मुकुटस्थानीय शारीरकभाष्य है तो उसकी शोभा के वर्द्धक मणि की जगह है पद्मपादाचार्य की टीका पंचपादिका। सूत्रभाष्य की यह प्रथम टीका है, आचार्य शंकर के सामने ही तैयार हुई एवं उन्होंने इसे स्वयं सुना-देखा यह इतिहास प्रसिद्ध है। यद्यपि आज यह चतुःसूत्रीयपर्यन्त ही उपलब्ध है तथापि वेदान्त मीमांसा के लिये पर्याप्त चिन्तन इसमें संगृहीत है। अनेक विशिष्ट प्रमेय और प्रक्रियाएँ इस टीका के अनुसार ही व्यक्त हो पाने से प्रायः भाष्यव्याख्याता इसी के ढंग को अंगीकार करते हैं यद्यपि प्रस्थानान्तर भी मान्य, प्रामाणिक है। विवरण और उसकी दो टीकाओं समेत पंचपादिका यद्यपि प्रकाशन ने पूर्व में उपलब्ध करा रखी है तथापि चतुःसूत्रीयभाष्य का पंचपादिकानुसार अनुसन्धान प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से मूलमात्र का यह संस्करण सुलभ कराया जा रहा है।

७०-दहर विद्या (हिन्दी)

श्री श्रीस्वामी महेशानन्द गिरि जी महाराज आचार्य महामण्डलेश्वर

आकार-20×30/8 पृष्ठ-273 मूल्य : 50=00

छान्दोग्य उपनिषत् के आठवें अध्याय के प्रारम्भ में हृदयकमल के सूक्ष्म विवर में परमेश्वर के ध्यान-चिन्तन-विज्ञान के साधनों को स्पष्टतः प्रतिपादित किया गया है। आत्मा के परमार्थ स्वभाव का वह वर्णन ठीक-ठीक हृदयंगम हुए बिना वह साधना सम्भव नहीं। अनेक वर्ष पूर्व श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य स्वामी महेशानन्द गिरिजी महाराज ने दिल्ली संन्यास आश्रम में इस विषय पर गम्भीर चिन्तन व्यक्त किया जिसमें आत्मस्वरूप के बारे में विशेष प्रकाश उपलब्ध होता है। प्रवचनात्मक यह ग्रन्थ न केवल दहरोपासकों के लिये वरन् वेदान्तविचारकों के लिये भी पठनीय है।

७१-गीता (संस्कृत)

शांकरभाष्य, अनुभूतिस्वरूपाचार्य-श्रीमद्आनन्दगिरि एवं रामरायकवि विरचित व्याख्याएँ

आकार-23×36/8 पृष्ठ-1300 (मुद्रणाधीन)

प्रस्थानत्रयी सनातन अध्यात्मचिन्तन की आधारशिला है। प्रमेय, प्रमाण एवं साधना (आचार) का सन्तुलन दर्शन का स्वरूप है। श्रीमद्भगवद्गीता सर्वांगपूर्ण दार्शनिक अभिव्यक्ति होने पर भी साधना का समग्र वर्णन है। सभी विचारकों ने गीता की महत्ता स्वीकारी है। वेदान्त सम्प्रदाय में इस ग्रन्थरत्न का महत्त्व अनुपम होने से सभी मत वालों ने इस पर व्याख्यान रचे हैं। भगवान् श्रीशङ्कराचार्य का भाष्य गीता का प्रथम विश्लेषण है, सभी परवर्ती व्याख्यान आचार्यवचनों पर निर्भर हैं। भाष्यार्थ के अवगम के लिये अनिवार्य निर्देश आवश्यक होने से गीताभाष्य पर श्री अनुभूतिस्वरूप आचार्य ने सम्भवतः प्रथम व्याख्या रची जो अद्यावधि अमुद्रित रही, इसी संस्करण में पहली

बार प्रकाश में आयी है। आचार्य आनन्दगिरि की सुप्रसिद्ध टीका तो इस ग्रन्थ में सुयोजित है ही, प्रायः सवा सौ वर्ष पूर्व भाष्य का बेल्लंकोण्ड रामराय कवीन्द्र कृत विस्तृत विवरण भी मुद्रित है जो अन्यत्र प्रायः दुर्लभ है। श्लोक-पद-उद्धरण आदि सूचियाँ सभी गीता-अध्येताओं के लिये पूर्ण उपयोगी है।

७२-तर्कसंग्रहसर्वस्यम् (संस्कृत)

सम्पादक-डॉ. विश्वनाथ धिताल

आकार-23×36/16 पृष्ठ-124 मूल्य : 70=00

न्यायशास्त्र के प्रारम्भिक ग्रन्थ तर्कसंग्रह के ऊपर कुरुगण्टि श्रीरामशास्त्री के द्वारा विरचित तर्कसंग्रहसर्वस्व नामकी यह टीका अवच्छेदकता आदि नव्यन्याय के पारिभाषिक शव्दावली से भरपूर है जो कि पारिभाषिक शब्दावली के अभ्यास के लिए अत्यन्त उपयोगी है। विशेष जगहों पर टीकाकार के द्वारा की गई टिप्पणी भी अत्यन्त उपयोगी है। साथ में सम्पादक के द्वारा भी तत्तत् स्थान पर विषयस्फोरण के उद्देश्य से टिप्पणी की गई है, जिससे जिज्ञासुओं को सुविधा हो जाती है।

विशेष

हमारे संस्थान द्वारा प्रकाशित समस्त पुस्तकें अंकित बुकसेलर द्वारा भी वी.पी.पी. से भेजी जाती हैं –

इण्डिका बुक्स

डी. 40/18, गोदौलिया, वाराणसी-221001 (उ.प्र.) भारत

फोन : 0542-2450818, 3294999

मो. : 09415697008

E-mail : indicabooks@satyam.net.in

Web : www.indicabooks.com

चौखम्बा विद्याभवन

पो.बा.नं.–1069 चौक, वाराणसी 221001

फोन नं. : 0542-2420404

मो. : 09839243286

E-mail : evbhawan@yahoo.co.in

बुक पोस्ट

सेवा में,

श्रीमान् / श्रीमती ....

....

....

प्रेषक :

व्यवस्थापक
श्री दक्षिणामूर्ति मठ प्रकाशन
डी. 49/9 मिश्र पोखरा
वाराणसी-221010 (उत्तर-प्रदेश)